वेदों की ओर लौटो...!

।। ओ३म् ।।

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

वर्ष १५ अंक ११ नवम्बर २०१५

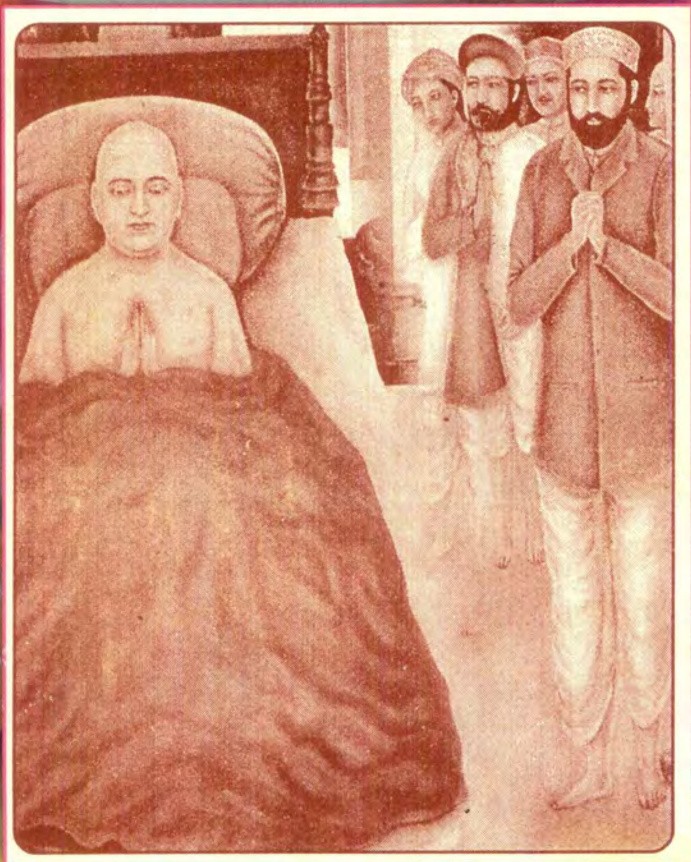

हा स्वामिन् ! सब आज दीप –अवली से शोभते ओक थे ,
था अस्तंगत सूर्य किन्तु श्रुति का, फीके पडे लोक थे ।
छोडा जीवन–मध्य आर्यगण को, हा शोक ! वे रोक थे,
हो आदर्श अनूप आप अब भी, जैसे श्रुतालोक थे ।।

- सामूहिक संस्कृत दिवस समारोह, परली -

मुख्यातिथि पं. सत्येन्द्रसिंहजी आर्य (मेरठ) का सम्मान करते हुए पं.प्रशांतकुमार शास्त्री ।

अध्यक्षीय मार्गदर्शन करते हुए आर्य समाज परली के मन्त्री श्री उग्रसेनजी राठौर । मंच पर हैं अतिथि डॉ. वंगे व अन्य विद्वान् ।

संस्कृत प्रतियोगिता में यशस्वी छात्रा को पुरस्कार प्रदान करते हुए सर्वश्री पं. सत्येन्द्रसिंहजी, पं.सन्दीपजी आर्य सौंदले, अवस्थी, लक्ष्मणजी आर्य ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६ कलि संवत् ५११६ विक्रम संवत् २०७२

दयानन्दाब्द १९२ आश्विन नवम्बर २०१५

प्रधान सम्पादक
माधव के. देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५११०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - प्रो.देवदत्त तुंगार, प्रो.ओमप्रकाश होलीकर
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) असहिष्णुता की राजनीति (सम्पादकीयम्)....................४
२) बढते अज्ञान व अंधविश्वास का क्या होगा ?.............६
३) दीप ! जिसने संसार को पुनः आलोकित किया...........१२
४) दीपपर्व (कविता)..१७
५) डॉ. रामचन्द्रजी पाटिल द्वारा एक लाख महादान...........१८
६) सभा द्वारा राज्यस्तरीय वक्तृत्व व निबंध स्पर्धा...........२४
७) समाचार दर्पण...२५
८) शोक समाचार...२६

मराठी विभाग

१) सुभाषित संदेश/दयानंदांची अमृतवाणी.........................२७
२) वैदिक साहित्य साधक स्व.भीमाशंकर साखरे................२८
३) राज्यस्तरीय वैदिक व्याख्यानमाला-कार्यक्रम.................३२
४) वार्ता विशेष..३३
५) शोक वार्ता..३४

● प्रकाशक ●
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज,परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. १००/-
आजीवन रु. १०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

सम्पादकीयम्

असहिष्णुता की राजनीति

भारतीय समाज की विडम्बना है कि यहां पर काम कम और बातें जादा होती हैं । देश के निर्माण व विकास पर सकारात्मक सोच तथा सहयोग की भावना तो दूर, परन्तु यहां पर तो दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं पर निन्दा, तिरस्कारादि की विद्वेषपूर्ण राजनीति चलती है । बात का बवण्डर बनाकर एक–दूसरोंपर घृणास्पद आरोप लगाने व बदनाम करने की होड लगी हैं । फिर इससे परस्पर शत्रुता का वातावरण बनाना अब हमारी प्रकृति ही बन चुकी है ।

आजकल देश में **असहिष्णुता** को लेकर संकीर्णता व अस्थिरता का वातावरण बन रहा है । डेढ – दो वर्षों से साहित्यकारों व समाजसेवियों की हत्याओं का निषेध व्यक्त करते हुए देश के दो दर्जनों से अधिक लेखकों, बुद्धिजीवियों व कलाकारों द्वारा अपने पुरस्कार लौटाने का क्रम जारी है । साथ ही अल्पसंख्यकों पर हुए हमलों व गोमांस पाबन्दी को लेकर कांग्रेस, वामपन्थियों सहित अन्य राजनैतिक दल व कईं तथाकथित सुधारवादी लोग इसका सारा दोष मोदी सरकार पर लगा रहे हैं । वस्तुतः ये आरोप–प्रत्यारोप विवेक की कसौटीपर खरे नहीं उतरते । सहिष्णुता की समाप्ति क्या केवल मोदी के सवा वर्ष के शासन काल में ही होती नजर आ रही है ? इससे पूर्व कांग्रेस शासन में क्या सब कुछ ठिकठाक था ? यदि पूर्वशासन काल में देश पूरी तरह शान्त, समृद्ध, भयमुक्त या सर्वदृष्टि से सुरक्षित था, तो देश का वातावरण सहिष्णु क्यों न बन सका ? साम्प्रदायिक तनाव क्यों बढते गये थे ? इससे स्पष्ट होता है कि मोदी सरकार पर असहिष्णुता के आरोप लगाकर ये लोग अपने पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों से स्वयं को सर्वथा निर्दोष साबित करना चाहते हैं और अपनी पूर्व परम्परागत साम्प्रदायिक तुष्टिकरण की नीति को बढावा देकर भविष्य में सत्ता का स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं ।

रही साहित्यकारों की पुरस्कार लौटाने की बात ! वास्तव में पुरस्कार वापस लौटाने की आवश्यकता ही नहीं है कहा गया । हित की भावना के साथ लिखा, कहा या आचरण में लाया गया विचार साहित्य होता है । वैदिक साहित्य व आर्यसमाज सबके पूर्ण हित व सहिष्णुता की बात करते हैं । तब ये लोग हमसे दूर क्यों ? हित की भावना से लेखनी चलानेवाले साहित्यकारों को तो देश के हित में ही सोचना चाहिए । बढती असहिष्णुता की यदि चिन्ता, है तो सहिष्णुता का वातावरण फैलाने के लिए

इन्हें प्रयास करना चाहिए । दुर्भाग्य से ऐसा कम दिखाई देता है । कितने साहित्यकारों ने अपने पुरस्कारों की राशियां राष्ट्रहित में लगाई तथा दीन-दुःखी, अकालपीडित लोगों की सहाय्यता हेतु खर्च की ? फिर इन्हें मिले सम्मान, प्रतिष्ठा या प्रसिद्धि का क्या ? यदि असहिष्णुता की चिन्ता ही है, तो देश में मानवता के प्रचार व प्रसार हेतु इन्होंने कितना योगदान दिया ? आज राष्ट्र में भ्रष्टाचार, अनाचार, आतंकवाद के साथ ही पारिवारिक विघटन, बेकारी-बेरोजगारी तथा युवक-युवतियों व छात्रों में बढते नैतिक अधःपतन जैसी ढेर सारी समस्याओं ने उथल-पुथल मचा रखी है । तब ऐसे समय में बुद्धिजीवी, साहित्यकार अपनी लेखनी व वाणी से कितना प्रयत्न प्रयत्न करते है । पुरस्कार लौटाने की बातें अभी ही क्यों हो रही है । देश के स्वतंत्रता के बाद अनेकों बार देश में असहिष्णुता बढती रही है । साम्प्रदायिक दंगाफसाद व तनाव का माहौल पहले भी बहुत बढा है । तब किसी को असहिष्णुता की चिन्ता नहीं हुई । अतः इससे स्पष्ट है कि धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देनेवाले कांग्रेस सहित सभी विपक्षी दलों, कम्युनिष्ट विचारधारावाले संगठनों, समाजवादी तत्वचिन्तकों तथा साहित्यकारों व उनके ही इशारों पर चलनेवाले मिडियावालों की यह मोदी विरोधी सोची समझी चाल है । बढती असहिष्णुता के लिए तो भाजपा सहित सभी राजनैतिक दल जिम्मेदार हैं । सहिष्णुता का अर्थ सहन करना, बरदाश्त करना, एक दूसरों के प्रति सहृदयता की भावना को अपनाना, सभी के साथ प्रेम व स्नेह का व्यवहार करना आदि होता है । इससे ये लोग दूर हैं । मत-पन्थों, जाति या अन्य भेदभावों को त्यागकर सबके साथ हर एक मानव मानवता का बर्ताव करें, यही सहिष्णुता हैं । हमारी संस्कृति, वेदादि प्राचीन ग्रंथ और उसके साथ ही सारी सृष्टि हमें सहिष्णुता का पाठ पढाती है । सहिष्णुता यह हर एक मनुष्य की आत्मा की आवाज होती है । सहिष्णुता धर्म हर एक व्यक्ति में विद्यमान है । यदि यह नहीं है, तो वह मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं है। बिना इसके मानव पशु ही बल्कि राक्षस कहलाता है । आज समाज व देश में नहीं बल्कि घर व आंगन में असहिष्णुता बढती दिखाई दे रहीं है । प्रतिदिन पारिवारिक संघर्ष व तणाव, हिंसा, हत्याएं व आपसी द्वेष-मत्सरादि की भावनाएं बढती जा रही है । ऐसे में हमें वेदानुमोदित सहिष्णुता का आश्रय लेना ही श्रेयस्कर है । समग्र वैदिक साहित्य सहिष्णुता से भरे है । इन्हीं वैदिक विचारों से हम विश्व में स्वर्ग स्थापित कर सकते हैं ।

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

- डॉ.नयनकुमार आचार्य

बढते अज्ञान व अंधविश्वास का क्या होगा ?

- डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी

आज सारी दुनिया में अनेकों मतानुयायी गर्व व अभिमान के साथ अपनी जाति व पंथों के संरक्षण तथा प्रचार-प्रसार करने में अग्रसर हैं । इसके साथ ही हर कोई राज्यसत्ता प्राप्त कर अपने पंथ या जाति का प्रसार सारी दुनियां में करना चाहता है । जब से ये प्रवृत्ति बढती गयी, तबसे धर्म के नाम पर नरसंहार, अत्याचार, अनाचार बढते ही रहे है । संसार का इतिहास इसका साक्षी है । हर एक मत व पन्थ के धर्मग्रंथ भी अलग-अलग बनवाये गये। हर एक मतानुयायी अपने-अपने ग्रन्थों पर दृढ विश्वास रखता है । वह अपने ही मत के अनुसार दुसरों को बनाना चाहता है । इसके लिए साम, दाम, दंड, भेद इन नीतियों का प्रयोग भी वह कर रहा है। जब इनके धर्मग्रंथ के अथवा पंथ के विरोध में किसी ने कुछ कहा या लिखा, तो उसे वे मृत्युदंड देने अथवा मार डालने जैसे कुकृत्यों को अपनाते हैं । आज भी इसका प्रत्यय बडे पैमाने पर दिखाई दे रहा है । सभी ने धार्मिक भावनाओं का अपना सुरक्षाकवच बना रखा है। धर्म या धर्मग्रंथ के विरोध में किसी ने कुछ टिप्पणी की अथवा विचार प्रकट किये, तो 'धार्मिक भावनाओं को ठेंच पहुंचाई' ऐसा आरोप लगाकर उसे दंड दिया जाता है । इसी धार्मिक भावना का सुरक्षाकवच आजकल के राजनेता तथा शासक लोग भी पहन रहे हैं और इस बात को न्यायालय तक ले जा रहे हैं।

सभी धार्मिक (पंथवादी)लोग कहते हैं कि, हमें मानवमात्र को सुखी करना है, सभी को शांति प्रदान करनी है, किन्तु होता कुछ विपरीत ही है । आज मानव दिन-प्रतिदिन अनेकों समस्याओं से घिरा हुआ नजर आ रहा है । वह दुःखी, अशांत और कष्टमय जीवन बिताता दिखाई दे रहा है । इसका क्या कारण है ? यह जानना आवश्यक है । अलग-अलग पंथों ने अपने-अपने क्षेत्र पर राज्य किया और कर रहे हैं, किन्तु वहां पर भी उनके धार्मिक राज्य में आपसी संघर्ष व लढाइयाँ पहले होती थी और आज भी जारी हैं ।

इस्लामिक देशों में आज आपस में कितनेही झगडे चल रहे हैं । भारत से अलग होने के बाद पाकिस्तान व बांग्लादेश इन दो इस्लामिक देशों में संघर्ष होता रहा । एक विचार के होने पर भी इनमें आपसी झगडे क्यों बढ रहे है ? ऐसा क्यों हुआ, इसका कारण ढूँढना आवश्यक है । भारतवर्ष में हिंदुओं का राज्य होते हुए भी अनेकों

राजा व संस्थानिक आपस में लढते रहे । आज श्री नरेंद्र मोदीजी की सरकार '**अच्छे दिन व सबका विकास**' ये नारे लगाकर सत्ता में आयी है। इनके ही अनुयायी आजकल हिंदू राष्ट्र बनाने की सोच रहे हैं । महाभारत में जो भाइयों का संघर्ष आपस में हुआ, जिससे सारे विश्व का नुकसान हुआ । यह क्यों हुआ ? यह युद्ध अपने पंथियों या पर पंथियों के साथ हुआ ? इन सभी समस्याओं का सही समाधान भारत के प्राचीन ग्रंथ वेद तथा सृष्टिक्रम के आधार पर महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने सत्यार्थ प्रकाश व वेदभाष्य आदि ग्रंथों में दिया है । उनकी इन रचनाओं का उद्देश्य भी यही रहा है ।

वेद और सृष्टि के नियम नित्य व शाश्वत नियमों को दर्शाते हैं । वहाँ पर केवल सत्यज्ञान ही विद्यमान है । सत्य के बिना दुनिया का पूर्ण कल्याण नहीं हो सकता और न ही किसी को सुख की प्राप्ति हो सकेगी । शास्त्र भी यही कहते हैं कि, अज्ञान ही सभी दुःखों का मूल है । अविवेक ही दुःखो का कारण है तथा अंधविश्वास के कारण ही सर्वत्र दुर्दिन आते हैं । ऋषि दयानंद ने इसके लिए सत्य की कसौटियाँ निम्न रुप से दी हैं।

१)वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है ।

२)सत्य यह सार्वभौम होता है ।

३)सत्य व्यक्ति, देश या कालसापेक्ष नहीं होता ।

४)सत्य सदैव सब के सर्वकाल कल्याण का होता है ।

५)सत्य यह सृष्टि के क्रमानुसार होता है ।

महाभारत के पश्चात बीच के काल में तथाकथित विद्वानों ने वेदों को तो मान लिया किंतु व उसके अर्थ मनगढन्त लगा दिये और फिर आचरण भी गलत करना शुरु किया । इसके परिणाम स्वरुप ही मत-मतांतर बढते गए । ईश्वर व धर्म के नाम पर व्यक्तिपूजा, हिंसा आदि शुरु हुए । आज भी सभी मत वा पंथवादी लोग पूरी तरह से अज्ञान में हैं । इसलिए न तो वे सुखी है और न ही उनके अनुयायी या सामान्य जनता सुखी है ? सभी के सभी दुःखी नजर आ रहे हैं । ईश्वर व धर्म के नाम पर आजकल के बढते झगडे बहुत ही चिंता का विषय हैं। इनका मूल कारण अज्ञान व अंधविश्वास ही है। स्वामी दयानंदजी ने इन्हीं दोषों के निवारण हेतु अपना पूरा जीवन लगाया तथा कठोर परिश्रम के पश्चात वेदज्ञान का 'सत्यार्थ प्रकाश' किया । उन्होंने सत्य व शाश्वत ज्ञान को दुनिया के सामने रखा और डंके की चोट के साथ कहा - सिवा वेदज्ञान के किसी का भी कल्याण नहीं हो सकता ।'

वेदज्ञान के साथ सृष्टि की व्यवस्था

भी शाश्वत है। इन दोनों की रचना परमात्मा ने जीवात्मा के कल्याण के लिए की है। तब वेद व सृष्टि का उपयोग आत्मा के कल्याण के लिए ही करना चाहिए। इसीलिए महर्षि दयानंद ने वेदों के अर्थ आत्मकल्याण हेतु लगाये हैं। सृष्टि में आज भी ईश्वर, जीवात्मा, धर्म, सुख की इच्छा, दुःख की अनिच्छा करनेवाला प्रत्यक्ष है। जब ये सभी प्रत्यक्ष हैं, तो ईश्वर, धर्म आदि के बारे में अनेक मत-मतांतर उत्पन्न होने का मतलब ही अज्ञान व अंधविश्वास है।

सम्प्रति संसार में ईश्वर को माननेवाले (आस्तिक) तथा न माननेवाले (नास्तिक) लोग बडी संख्या में विद्यमान है।

अ) आस्तिक लोग - १. ईश्वर की सत्ता को माननेवाले व उसपर विश्वास रखनेवाले लोग अज्ञान व अंधविश्वास के साथ ईश्वर को मानते हैं। यह तो एकतरह से ईश्वर से दूर जाना ही है। इनमें संसार के हिंदू, मुस्लिम, ईसाई पारसी आदि सभी आते हैं।

२. बहुत कम लोग ईश्वर के सही स्वरुप को जानते व मानते है। वे सृष्टि के पीछे काम करनेवाली व कर्मफल देनेवाली शक्ति को अदृश्य, सर्वव्यापक व सर्वज्ञ के रुप में मानते हैं, वे ऋषि मुनियों व वेद के आधारपर ही अपना विचार व्यक्त करते हैं। इस श्रेणी के लोग आर्य समाज के अनुयायी हो सकते हैं।

३. ईश्वर के विषय में अज्ञानी लोगों के विचारों को मान्यता न देते हुए केवल निसर्ग के पीछे काम करनेवाली जो एक दिव्य अदृश्य शक्ति है, उसपर विश्वास रखते है। वे ईश्वर की सत्ता को मानते नहीं, ऐसा समझनेवाले आधुनिक विज्ञानवादी लोग है

ब) नास्तिक लोग - १. ईश्वर को न माननेवाले नास्तिक लोग अधिक मात्रा में प्रतिक्रियावादी हैं। अज्ञानी व अंधविश्वासी लोगों ने ईश्वर का सत्यस्वरुप, उसका कार्य, उसकी उपासना, प्रार्थना आदि के नाम पर पाखंड रचाया तथा बलिप्रथा आदि मान्यताएँ प्रचलित की। ऐसी मान्यताओं को विचारवान लोगों ने मान्यता नहीं दी और ईश्वर को न मानने की धारणा सर्वत्र फैलायी।

२. अज्ञानी, अंधविश्वासी व कट्टरपंथी तथा हठी लोगों की गलतियाँ बताने पर तथा धर्मग्रन्थों पर प्रश्न पूछने पर अपनी गलतियाँ ठीक करने के बजाय तथा सत्य स्वीकारने के बजाय उन्हें ही नास्तिक व अनीश्वरवादी घोषित किया गया। इनमें बौद्ध, जैन, चार्वाक तथा आधुनिक विज्ञानवादी लोग सभी आते हैं।

इतना होने पर भी आज तक इन लोगों ने अपना दुराग्रह नहीं छोडा। आज

भी ईश्वर के नाम पर ऐसे अनेकों मत मतांतर अधिक मात्रा में बढ रहे हैं। ईश्वर के अनेक नाम, अनेकों आकार-प्रकार तथा जो गुणकर्म बताये जाते हैं, क्या वे सही हैं ? क्या ईश्वर यह शब्द वेद में है, तो क्या वह सृष्टि आज भी नहीं है ? फिर ईश्वर का मानवमात्र के सुख से संबंध है या नहीं ? यदि है, तो सच्चे ईश्वर से लाभ होगा अथवा झूठे ईश्वर से ? क्या ईश्वर मनुष्य के जैसा ही अज्ञानी है ?

परमात्मा के बारे में वेद, उपनिषद, दर्शन आदि सभी ग्रंथ यथार्थ ज्ञान देते हैं। वे एक ही सच्चे ईश्वर का पथ दर्शाते हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती ने भी एकही सत्य ईश्वर का प्रतिपादन कर उसके शुभ गुण व कर्म बतायें हैं। उन्होंने आर्य समाज के पहले और दूसरे नियम में ईश्वर के कार्य व स्वरुप को बताया है। पहले नियम में परमात्मा को सब सत्य विद्याओं का आदिमूल बताया है तथा दूसरे नियम में उसके सच्चिदानंद स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान आदि गुण स्पष्ट किये हैं।

सच्चा ईश्वर ही हमें सही अर्थों में सुख देनेवाला व सभी दुखों का निवारण करनेवाला है। वह सभी को सत्यज्ञान देता है। सृष्टि के नियमों को भी वही बताता है और उन नियमों पर चलने का आदेश देता है। ईश्वर ही आत्मा को उसके साथ ही जुडने का मार्ग प्रशस्त करता है। यह प्रक्रिया आज भी निरंतर जारी है। फिर भी आज का मनुष्य अज्ञान के कारण सच्चे ईश्वर से दूर है। परमात्मा सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक होने से आत्मा में भी व्याप्त है, तो ऐसे ईश्वर को हम कहाँ ढूँढे ? अंदर या बाहर ? सृष्टि में या निसर्ग में जो कुछ भी हो रहा है, वह पहले भी होता था, आज भी होता रहा है और आगे भी होता रहेगा। ऐसे सत्य को हम क्यों नहीं देखे ? ईश्वर की जो व्यवस्था है, उसमें परोपकार, सबका कल्याण, न्याय व कर्मफल सिद्धांत निहित है। जैसा बीज होगा, वैसा ही वृक्ष दिखाई देगा। प्राणियों अथवा मनुष्यों के शरीरों को कौन निर्माण करता है, उसका संवर्धन व संरक्षण भी कौन करता है ? जन्म-मृत्यु की व्यवस्था किसके हाथ में है। हमने जो भी खाया हुआ है, उस अन्न का रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य इन सप्त धातुओं में कौन रुपांतरीत कर रहा है ? और यह निर्माणकार्य किसलिए हो रहा है ?

सृष्टि में सूर्य, चंद्र, हवा, पानी, अग्नि, वनस्पति, प्राणी आदियों का निर्माण किसने व क्यों किया है ? सृष्टि का कण-कण यही बताता है कि मनुष्य हो या अन्य प्राणी वे इन सभी सृष्टितत्त्वों का निर्माण नहीं कर सकते। दूसरी बात यह है कि

सृष्टि के सभी तत्त्वों का कुछ ना कुछ निश्चित उद्देश्य है। उसकी एक अखंडित व्यवस्था है। आत्मा के लिए ईश्वर ने यह सारा खेल रचाया है। आत्मकल्याण कर लेना यह आत्मा का ही कर्तव्य है। उसके लिए साधन-सामग्री और ज्ञान परमात्मा ने ही दे रखा है। साथ ही इन सबका उपयोग करने की स्वतंत्रता भी दे रखी है। किन्तु साथ ही शाश्वत न्याय भी उपलब्ध किया है। मनुष्य जैसा कर्म करेगा, वैसा ही उसे फल मिलेगा। अच्छे कर्म करेगा व साधनों का सदुपयोग करेगा तो सुख व आनंद मिलेगा और बुरे कर्म करेगा अथवा साधनों का दुरुपयोग करेगा, तो उसे दु:ख भी उठाना पडेगा और बिमारियाँ व मृत्यु भी आयेगी। यह न्यायव्यवस्था सब के लिए एक जैसी और सार्वभौमिक है। इस व्यवस्था को कोई भी परिवर्तित नहीं कर सकता। गलतियाँ करने पर क्षमा भी नहीं होगी और दंड तो निश्चितही मिलेगा। ईश्वर की व्यवस्था में किसी भी प्रकार की सिफारीशें नहीं चलती, वहाँ पर एजेन्सियाँ अथवा अन्य कार्यव्यापार भी नहीं चलता। हर बात के लिए स्वयं की आत्मा जिम्मेदार है।

आत्मा की इच्छा है - 'परमात्मा को प्राप्त करने की।' वह आनंद या तो ईश्वर के गुणों को धारण करने व आचरण में लाने से ही मिलेगा ! या तो प्रत्यक्ष ईश्वर के सान्निध्य में बैठने से प्राप्त होगा। परमात्मा का स्थान, मार्ग, यह सब कुछ निश्चित व शाश्वत है। गाढ निद्रावस्था में सिर्फ आत्मा व परमात्मा दोनों ही रहते हैं। वैसा ही जागृत अवस्था में शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि इन सभी को संयमित करके अंतर्मुख वृत्ति से हम आनंदमय कोष में प्रवेश कर सकते हैं। यहाँ पर भी किसी प्रकार का एजंट काम नहीं करता। उसके सान्निध्य में परमानंद या मोक्ष मिलता है। इसे प्राप्त करना आत्मा का ही काम है। अज्ञान, अंध:विश्वास के कारण ईश्वर के सच्चे स्वरुप, गुण, न्याय व्यवस्था, उद्देश्य, शाश्वत ज्ञान आदि बातों को बदलकर लोगों ने ईश्वर के नाम पर माफी, जडपूजा, एजन्सी, मक्तेदारी आदि बातें प्रचलित कर दी। आत्मा को परावलंबी बनाकर उसका शोषण करना आदि बातों से क्या सही अर्थों में सुख व आनंद मिलेगा ? क्या इससे आत्मकल्याण होगा ? जो लोग अज्ञान व अंधविश्वास में पडकर दुराग्रह कर रहे हैं, ऐसे लोगों के जीवन का क्या कल्याण होगा ? क्या उनकी आत्माएँ प्रसन्न होगी ? आत्मा की इच्छा के अनुसार क्या उन्हें सुख मिलेगा ? यह व्यवहार तो एक प्रकार से आत्महनन ही है।

राज्य किसी का भी क्यों न हो ?

चाहे वह हिंदुओं का या मुसलमानों का, ईसाइयों का हो या नास्तिकों का ! यह महत्त्व की बात नहीं है । जीवन का सही अर्थों में कल्याण और आत्मकल्याण ही महत्त्वपूर्ण बात है । इसी तरह धर्म या जाति के बारे में हो या जीवन लक्ष्य, धर्मग्रंथ अथवा सत्यज्ञान के विषय में हो, अथवा सुख-दु:ख, नीति-न्याय आदि विषयों के बारे में क्यों न हो, सभी मत व पंथवादी तथा धार्मिक कहलानेवाले लोगों में अज्ञान, अंधविश्वास भरा पड़ा हुआ है । पहले वेद को जाननेवाले विद्वान अधिकारियों ने शब्द वही रखे और अर्थ बदल दिये, साथ ही आचरण भी बदल दिये । सही अर्थों में बिगाड तो यहीं से शुरु हुआ है । दुनिया का सुधार चाहनेवाले लोग पहले वेद की यथार्थ बातों को स्विकार करें, वेद के शाश्वत सत्य को मानें और उसी के अनुसार अपना शुद्ध आचरण करे । तत्पश्चात् लोगों को एकमात्र वही वैदिक मार्ग बताए, तभी तो सारे संसार का कल्याण होगा, अन्यथा सर्वत्र दु:ख ही दु:ख बढता जाएगा । आज अज्ञान व अंधविश्वास के कारण चारों वेद व वेद के शब्द बदनाम हुए हैं । पाश्चात्य विद्वानों ने वेद को गडरियों के गीत बताये । साथ ही यहाँ के नास्तिक व आधुनिक कहलानेवाले सुधारकों ने भी वेदों के निंदा की । वैदिक तत्त्वज्ञान की ओर अनदेखी कर इसे मानने से इनकार किया व समाज को भी भ्रमित किया । किन्तु हमारा सौभाग्य कि, उन्नीसवीं शताब्दी के महान युगपुरुष महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रबल पुरुषार्थ से हमें पुन:श्च शुद्ध रुप में वेदज्ञान उपलब्ध हुआ । उनकी कृपा से हमें वेदभाष्य प्राप्त हुए, जिनमें मानवजीवन व प्राणीमात्र के पूर्ण कल्याण निहित है । स्वामीजीने विश्व कल्याण के साथ ही आत्मकल्याण की बात वेदों द्वारा बताकर वेद की प्रतिष्ठा बढाई है । स्वामीजी के वैदिक विचारों के बिना संसार का कल्याण कभी भी नहीं हो सकता । आईये हम सब मिलकर इन्हीं वैदिक विचारों द्वारा संसार से अज्ञान व अंध:विश्वास को समाप्त कर अपने पुर्वजों की भाँति भारतवर्ष का गौरव गढाये और विश्व में चक्रवर्ति साम्राज्य स्थापन करे ।

महर्षि दयानंद प्रणित वेदज्ञान, सृष्टिक्रम (सृष्टिविज्ञान) और आर्षग्रंथों के आधार ही हम संसार में शांति व सुख का वातावरण स्थापित कर सकते है क्योंकि इन्हीं वैदिक विवादों के द्वारा हम **सार्वभौम** तौर पर सर्वत्र एक ईश्वर, एक धर्मग्रंथ, एक मानवधर्म, एकही मनुष्यजाति, एकही जीवन लक्ष, एकही नीतिन्याय, एकही कर्मफल व्यवस्था तथा एकही न्याय व्यवस्था का वातावरण बना सकते हैं ।

ऋषि निर्वाणोत्सव व दीपावली पर्व पर विशेष-

दीप! जिसने संसार को पुनः आलोकित किया

– गणेश शरण विद्यार्थी

ज्योति पर्व दीपावली ! युगों युगों से अनेक-अनेक दीपों को प्रज्वलित कर अन्धकार को दूर करने का एक प्रतीकात्मक लघु प्रयास ! पर इसी पर्व से अनुप्राणित होकर जो स्वयं ही दीप बन गया, गुरूवर दण्डी स्वामी विरजानन्द द्वारा प्रज्वलित हो कर मात्र दो दशकों से भी कम समय में जिसने युगों - युगों के अंधेरे को चीर कर संसार को पुनः आलोकित कर दिया, वह महामानव था -**'स्वामी दयानन्द सरस्वती'**। निशा घोर अविद्या की मिटाकर इस धरा धाम पर वेदभानु को जिस सिद्ध योगी ने पुनः चमकाने का सुकार्य किया था, वह था- 'स्वामी दयानन्द सरस्वती।'

वेद में कहा गया है - **'ऋषिः स यो मनुर्हितः।'** (ऋग् १०/२६/५) ऋषि वह है, जो मानवमात्र का हितकारी हो। इस दृष्टि से स्वामी दयानन्द सरस्वती, न केवल ऋषि थे, वरन महर्षि थे। उन्होंने न केवल सत्य सनातन वेद और प्राचीन आर्ष ग्रंथों के आधार पर भूले भटके और मत मतान्तरों के जाल में अटके मानवों को सत्य, धर्म और न्याय का मार्ग बताया, अपितु आनेवाली पीढियों के लिए भी युगों -युगों तक सही और श्रेष्ठ चिन्तन एवं मनन के लिये दिशा भी प्रदान की।

अपनी आयु__ के २२ वें वर्ष में मूलजी के रूप में ऋषिवर दयानन्द ने दीपावली से लगभग एक माह पूर्व सत्य की खोज के लिये गृहत्याग किया था। पन्द्रह वर्ष पश्चात् जीवन में विभिन्न प्रकार के अनुभवों को लेकर उनकी यह यात्रा जब मथुरा आकर समाप्त हुई, तब भी दीपावली ही थी। आर्य पथिक पं. लेखरामजी के अनुसार संन्यासी के रूप में ऋषिवर दयानन्द गुरूवर विरजानन्द की शरण में जिस दिन पधारे थे, वह दिन भी दीपावली के पश्चात् कार्तिक शुक्ल २ (यम द्वितीया) सं. १९७१ तदनुसार बुधवार १४ नवम्बर सन् १८६० ई. था। लगभग साढे तीन वर्ष तक अध्ययन कर पूर्ण वैयाकरण हो कर गुरू दक्षिणा के रूप में संसार में आर्ष ज्ञान की दिव्य आभा पुनः प्रकाशित करने, सर्व साधारण के अन्दर वेद प्रचार करने तथा अवैदिक मतों, रूढियों और परम्पराओं को खण्डन करने की शपथ लेकर ऋषिवर दयानन्दरूपी यह प्रकाशमान् दीपक झंझावतों को सहते हुए जिस शान और गरिमा से अगले १९ वर्षो तक जलता रहा, घूम-घूम कर आर्षज्ञान की ज्योति

जलाता रहा, उसका उदाहरण विश्व इतिहास में मिलना असम्भव है । विभिन्न मतावलम्बियों के विद्वानों से इस अवधि में ४५ से अधिक शास्त्रार्थ करना, वेदभाष्य के अतिरिक्त लगभग ३० ग्रंथों का प्रणयन करना, विशुद्ध यज्ञीय परम्परा और संस्कारों को पुनः स्थापित करना, लगभग ३,००० से अधिक व्याख्यान विभिन्न स्थानों पर देना आदि सब कुछ किसी भी चमत्कार से कम नहीं था, जो ऋषिवर ने कर दिखाया । और फिर संवत् १९४० वि. की दीपावली ३० अक्टूबर १८८३, मंगलवार का दिन ! मानों, इस दीप की लौ बुझने से पहले और तेज हो गई हो । लोगों ने पूछा– 'अब आपका चित्त कैसा है ? 'उत्तर दिया– 'अच्छा है, तेज और अन्धकार का भाव है ।' सायंकाल साढे पांच बजे का समय ! सब पर मुस्कराते हुए अन्तिम कृपा दृष्टि ! स्वामी आत्मानन्द और स्वामी गोपाल गिरि को आशीर्वाद ! फिर सबको सामने से हट कर पीछे खडे होने का आदेश ! सब दरवाजे रोशनदान खोल देने का अनुरोध ! छत की ओर दृष्टि ! वेद मन्त्रों का मधुर उच्चारण ! फिर संस्कृत, तदुपरान्त भाषा में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना ! पुनः **गायत्री मन्त्र** तथा **विश्वानि देव मन्त्र** का पाठ ! फिर समाधिस्थ हो कर अन्दर ही अन्दर अन्तर्यामी परमेश्वर से साक्षात्कार एवं वार्तालाप ! कुछ देर पश्चात् नयन खोल कर अपने अन्तिम उद्गार का प्रगटीकरण – **'हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर । तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो । आहा !'** और करवट ले कर श्वास को रोक कर एक बार में ही प्राणों का उत्सर्ग, मानों आत्मा वर्षों से बिछडे अपने अभिन्न सखा परमात्मा से आनन्दधाम में जा मिल हो । **इन्द्रस्य युज्यः सखा** । (यजु. १०/११) इन्द्र का युज्य सखा अन्ततः वह परमात्मा ही तो है ।

ऋषिवर दयानन्द का जीवन जितना दिव्य आदिव्य और प्रकाशमान था, उनका निर्वाण (देहत्याग) कर आत्मा का मुक्ति के आनन्द मे परान्त काल के लिए पदार्पण कर जाता भी उतना ही भव्य और प्रेरणादायक था । श्री गुरूदत्त विद्यार्थी जैसे विद्वान्, जो भौतिक विज्ञान के अध्येता तथा विचारक थे और अपने को नास्तिक कहने में नहीं हिचकते थे, इस दृश्य को देख कर परम आस्तिक हो गये । परम सत्ता ईश्वर है और योगी ब्रह्म का साक्षात्कार करने में सर्वथा समर्थ हैं, यह विश्वास अनेको का दृढ को गया । ऋग्वेद (५/१०/४) का एक मन्त्र है –

ये अग्ने चन्द्र ते गिरः शुम्भन्त्यश्वराधसः । शुष्मेभि शुष्मिणो नरो दिवाश्चद् येषां बृहत् सुकीर्तिर्बोधतित्मना ।।

इसका भाव यह है – **(ये)** जो **(अग्ने)** प्रकाश स्वरूप **(चन्द्र)** आनन्द प्रदाता परमेश्वर से युक्त होकर **(त्मना बोधति)** आत्मना बोध को प्राप्त होते हैं, वे **(नरः)** महापुरूष **(शुष्मेभिः)** बलों के साथ **(शुष्मिणः)** महाबली हो कर **(ते)** तेरी **(अश्वराधसः)** सर्व प्रकार की सिद्धि एवं धनैश्वर्यों को प्रदान करनेवाली वेदवाणी को सुशोभित वा सुसार्थक करते हैं। **(एषाम्)** ऐसे महापुरूषों की **(सुकीर्ति)** सुकीर्ति **(दिवः)** दिव्य द्यौ से **(चित्त्)** भी **(बृहत्)** विशाल होती है।'

महर्षि दयानन्द ने इसको अपने जीवन से सिद्ध कर दिखाया। आत्मना बोध को प्राप्त कर जीवन भर योगारूढ रह कर वेदवाणी का जो सत्य अर्थ उन्होंने अखिल विश्व में प्रकाशित किया, उसकी सुकीर्ति और सुयश युगों – युगों तक विद्यमान रहेगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

विलक्षण दीप था दयानन्द–

अन्धकार को दूर करने के लिये पृथिवी के विभिन्न देशों में विभिन्न महापुरूषों ने समय–समय पर दीपक जलाये, परन्तु वे टिमटिमा कर ही रह गये। महाभारत के काल के पश्चात् जब संसार में वाममार्ग बढ गया, तो पृथिवी पर बुद्ध ने अनाचार को रोकने के लिये अहिंसा और पवित्र आचरण का दीपक जलाया, पर ईश्वर और वेद को समझ न पाने के कारण वे मौन हो गये। फलस्वरूप उनके शिष्यों ने घोर नास्तिकता और जड पूजा फैला दी। नास्तिकता को दूर करने के लिये आदि शंकराचार्य ने नवीन वेदान्त का दीपक लेकर अंधकार को भगाना आरम्भ किया, परन्तु वे जीव और ब्रह्म में भेद न कर सके। प्रकृति को ब्रह्म की माया समझ बैठे। और फिर अद्वैत और द्वैतवाद की ऐसी आंधी चली कि सब कुछ गुड गोबर हो गया। पृथिवी के अन्य भागों में **कन्फ्यूशस, फीसागोरस, सुकरात, अरस्तु** आदि ने प्रकाश के दीपक जलाये, किन्तु वेदज्ञान से अनभिज्ञता के कारण वे टिमटिमा कर रह गये। करूणा, प्रेम और दया को आधार बना कर ईसा मसीह ने संसार को प्रभावित तो किया, किन्तु वेदज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण वे भ्रान्त धारणाओं और व्यक्ति पूजा रूपी चक्की के दो पाटों में पिस कर रहे गये। यही हाल इस्लाम मत के प्रवर्तक मुहम्मद सा का हुआ। इन्होंने एकेश्वरवाद का समर्थन और बुत परस्ती का खण्डन तो किया, लेकिन सत्यज्ञान के अभाव में और खुद को ईश्वर का दूत मनवाये जाने के चक्कर में वे सही दिशा न दे सके। सही कसर कुफ्र को जहाद के द्वारा समाप्त करने में उनके अनुयायियों ने तलवार के जोर पर खून की नदियां बहा कर पूरी कर दी।

दयानन्द रूपी दीपक विलक्षण ही था। योगिराज श्रीकृष्ण के लगभग पांच

हजार वर्ष बाद वेदज्ञानरूपी तैल के आश्रय से खुद को बाती बना कर वह जला और खूब जला ! और बुझने से पहले सत्य ज्ञान का प्रकाश करनेवाले अनेकों दीपक जला गया । **अग्निनाग्निः समिध्यते** । (ऋ.१/१२/६, साम ८४४) अग्नि से प्रज्वलित होती है । ऋषिपर दयानन्द ने इसको सार्थक कर दिखाया और एक ऐसी दिशा दी, जिससे यह अग्नि एक से दूसरे को अग्रसारित होती रहे और इस प्रकार युगों – युगों तक प्रकाश करती रहे । मानव जीवन दर्शन की जिन गुत्थियों को संसार का कोई भी दर्शन नहीं सुलझा सका, उनको दयानन्द के वेद प्रतिपादित त्रैतवाद (अर्थात् ईश्वर, जीव और प्रकृतिके प्रत्येकको स्वतंत्र सत्ता) ने सुलझा दिया । स्वामी दयानन्द ने **'ईश्वर की सिद्धि'** सब प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से कर दी, जबकि उनके पूर्ववर्ती आस्तिकवादी भारतीय दार्शनिक भी अनुमान आदि प्रमाणों के आधार पर ही ईश्वर की सिद्धि मानते रहे थे । जिसे स्पष्टवादित के साथ इन्होंने ईश्वर के स्वरूप का न केवल वर्णन, परन्तु सिद्ध किया व युगों – युगों तक एक सर्वसामान्य सिद्धान्त के रूप में प्रतिष्ठित रहेगा ।

जादू वह जो सर पर चढ कर बोले । कार्ल मार्क्स और स्वामी दयानन्द समकालीन थे । दोनों का देह त्याग सन् १८८३ ई. में हुआ । मार्क्स का १४ मार्च को और दयानन्द का ३० अक्टूबर को । दोनों ही समग्र क्रन्ति के अग्रदूत रहे । पर हमने क्या देखा ? बीसवीं शताब्दी की समाप्ति तक कार्ल मार्क्स के दर्शन की उसकी असफलता के कारण हमारे जीवन में ही देखते – देखते धज्जियां उड गई । और दयानन्द का दर्शन, जो वस्तुतः वैदिक दर्शन है, उसके बारे में यह कहा जा रहा है कि २१ वीं शताब्दी की चुनौतियों का सामना करने में यदि कोई विचारधारा समर्थ हो सकती है तो वैदिक विचारधारा का वह स्वरूप है, जिसका प्रतिपादन स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया था

अन्धकार को दूर करने के लिए समय – समय पर इस धरा पर जो दीप जले उनकी तुलना में ऋषिवर दयानन्द विलक्षण रूप से अभूतपूर्व थे । ऋषिवर दयानन्द जैसे पूर्ण योगी, पूर्ण ब्रह्मचारी समस्त शास्त्रपारंगत और ब्रह्मवेत्ता कोई न था । 'भ्रान्तिनिवारण' नामक पुस्तक में ऋषि दयानन्द एक स्थान पर लिखते हैं कि **"मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से ले के पूर्व मीमांसा पर्यंत अनुमान से तीन हजार ग्रंथों के लगभग मानता हूं तथा कर्मकाण्ड के विषय में यह उत्तर है कि मेरा मत वेद पर है । इसलिए जो जो कर्मकाण्ड वेदानुकूल है, सबको मानता हूं, उससे विरूद्ध को नहीं । क्योंकि वे ग्रंथ मनुष्यों ने अपने स्वार्थ साधन के निमित्त रच लिये हैं । वे वेद, युक्ति वा प्रमाण से सिद्ध नहीं हो**

सकते ।"

इन वचनों से स्वतः ही सिद्ध होता है कि उनका अध्ययन कितना विस्तृत और विशाल था । वेद भाष्य की भूमिका और जो दिशा वेद भाष्य के माध्यम से संसार को उन्होंने दी, उससे स्पष्ट है कि वह पृथिवी से लेकरईश्वर पर्यंन्त समस्त विद्याओं के मूल सिद्धान्तों को योगदृष्टि से निर्भ्रान्त जानते थे । पूर्ववर्ती आचार्यो की भांति वेद उनके लिये केवल मात्र कर्मकाण्ड का ग्रंथ न था, वरन सब सत्य विद्याओं का पुस्तक था, जिससें मनुष्य मात्र की सर्वकाल में सब प्रकार की उन्नति हो सके । मानव जीवन के उत्थान हेतु जितना कर्मकाण्ड आवश्यक था, वह उन्होंने पञ्चमहायज्ञ विधि (जिसको उन्होंने नित्यकर्मविधि भी कहा) और संस्कार विधि में भली प्रकार समाविष्ट कर दिया उनका सारा जोर मनुष्यों के सत्य विद्याओं के ग्रहण करने, सद्आचार और सद् व्यवहार को वर्तने, वर्ताने तथा सद् विचारों का प्रकाश करने पर था । **भ्रान्तिनिवारण** पुस्तक की भूमिका में उनके यह शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं – **परन्तु क्या करूं, मैं तो अपना तन, मन, धन सब सत्य के ही प्रकाशार्थ समपर्ण कर चुका । मुझसे खुशामद करके अब स्वार्थ का व्यवहार नहीं चल सकता । संसार को लाभ पहुंचाना ही मुझको चक्रवर्ती राज्य के तुल्य है** । सचमुच विलक्षण थे दयानन्द !

एक बात और ! आज तक दुनियां में दयानन्द को छोडकर जितने भी विद्वान् दार्शनिक हुए हैं उन्होंने अपने बहुमूल्य चिन्तन और विचारों से उलझाया ज्यादा है, सुलझाया कम है । दयानन्द ही ऐसा ऋषि है, जो अपने मन्तव्य को अनेक स्थानों पर प्रमाण और तर्कसहित स्पष्ट करता हुआ चलता है । सर्वसाधारण को कोई भ्रम न हो जाय, या कोई उसके कथन का गलत अर्थ न निकाल ले, इसके लिए सब मनुष्यों के हितार्थ वह स्पष्ट भाषा में **स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश** और **आर्योद्देश्यरत्नमाला** जैसी पुस्तकें रच जाता है, और आगे आने वाली पीढियों के लिये मार्ग प्रशस्त कर जाता है ।

दीवावली पर आत्मचिन्तन जरूरी–

दीपावली के पावन पर्व पर हम थोडा आत्मचिन्तन इस विषय में करे कि संसार में अभी भी जो अन्धकार, अज्ञान, अविद्या, अन्याय है उसको दूर करने के लिए हमने क्या योगदान दिया है । ऋषिवर दयानन्द यद्यपि हमारे समक्ष नहीं हैं, परन्तु उनकी वसीयत तो है । वसीयतनामे में लिखी उनकी इच्छाएं तो हैं । यथा–

१) वेद और वेदांग आदि का प्रचार, उनकी व्याख्या करना – करवाना, पढना– पढाना, सुनना–सुनाना, छापना–छपवाना

२) वैदिक धर्म के उपदेश और शिक्षा के लिए उपदेशक मण्डली नियत करके देश–

देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में भेजकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्या करवाना । ३) आर्यावर्त्त के अनाथ और दरिद्र मनुष्यों का पालन और उनकी शिक्षा ।ऋषि दयानन्द के प्रयाण के १३२ वर्ष बाद भी कितना कुछ करना शेष है, इसपर मिल कर हम चिन्तन मनन और योजनाबद्ध तरीके से कार्य करे ! दीपावली की सन्ध्या का यही सन्देशे और यही आदेश है ।

(साभार - टंकारा समाचार नवम्बर १९)

-बी. १२८/१, पूर्वी कैलाश,
नई दिल्ली-६५

दीपपर्व

आ गया है दीप- पर्व 'दीपावली'
बडा महत्व है इसका
हम आर्यों के लिए !
आज ही के दिन
महर्षि ने त्यागी नश्वर देह
विदा ली संसार से,
देकर वेद-ज्योति
मिटा कर भ्रान्तियाँ संसार की ।
और...प्रज्वलित कर गये
गुरूदत्त जैसे कईं दीप
देकर नई रोशनी,
हजारों वर्षों का अन्धेरा
कर दिया दूर
निज जीवन-ज्योति से,
दे दिया पथ नवीन दिशा-विहीन,

भटके हुए जगत् को ।
हर आर्य हो अपने आप में
एक दीप, जगमगाता
निकलती हों जिससें किरणें
प्रखर वेद ज्ञान की
तीर की भांति नाश
तम का करें जो,
नहीं दिखाई देगी कहीं
अज्ञान की रात काली
सच्चे अर्थों में वही
होगी दीपावली !

- दाताराम आर्य 'आलोक'
ग्रा.पो.बुटेरी, तह, बानसुर,
जि. अलवर (राज.)

- वैदिक गर्जना के ग्राहकों से निवेदन -

सभी ग्राहकों को वैदिक गर्जना के अंक समय पर भेजे जा रहे हैं । यदि किसी को नही मिलते होंगें, तो वे अपने निकटस्थ डाक कार्यालय से पूछताछ करें । इस पर भी अंक प्राप्ति न होती हो, तो सभा के **व्यवस्थापक श्री रंगनाथ तिवार (०९४२३४७२७९२)** से सम्पर्क करें । अपनी ग्राहक संख्या अवश्य बतावें । दुबारा अंक भेजे जायेंगें ।

ज्येष्ठ भ्राताजी के ५० वें जन्मदिवस पर भाई व भाभीजी के गौरव में

डॉ. रामचन्द्रजी पाटिल द्वारा १,११,१११/- का महादान

वेदप्रचार हेतु प्रान्तीय सभा में स्थिरनिधि की स्थापना

दानदाता डॉ. पाटिल दम्पती (लन्दन)

गौरवमूर्ति भ्राताश्री व भाभीजी

आधुनिक समाज के लिए महती प्रेरणा का विषय है कि गत १७ वर्षों से लन्दन में वेदप्रचार कर रहे युवा विद्वान् डॉ. रामचंद्रजी व उनकी सहधर्मिणी डॉ. मीनाक्षीदेवी पाटिल ने अपनी अनोखी उदारता का परिचय देते हुए आदर्श भ्रातृप्रेम का अनोखा उदाहरण समाज के सम्मुख रखा है। हाल की में उन्होंने अपने ज्येष्ठ भ्राताश्री राजेन्द्रजी (श्रीकृष्ण) अण्णारावजी पाटिल (औराद तह. उमरगा जि. उस्मानाबाद) के पचासवे जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भाई व भाभीजी सौ. महान्तेश्वरी के गौरव में रू. १,११,१११/-(एक लाख ग्यारह हजार एकसौं ग्यारह रूपयों) का स्थायीकोष (स्थिरनिधि) वेदप्रचार हेतु महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में स्थापन किया है।

संक्षेप में परिचय-

महाराष्ट्र के **औराद** उमरगा जि. उस्मानाबाद नामक कान्तिकारी ग्राम की सर्वत्र बहुतही ख्याति है। अनेकों युवकों को वेदविचारों से सुसंस्कारित करनेवाले तपस्वी संन्यासी पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चंद्र गुरूजी) के कारण इस गांव का नाम प्रसिद्ध है। इन्हींके संपर्क से कर्मठ आर्य समाजी बनें श्री विज्ञानमुनिजी (अण्णाराव पाटिल) व माता शकुंतलादेवी जैसे आदर्श गृहस्थी की द्वितीय सुसंतान होने का सौभाग्य श्री डॉ. रामचन्द्रजी को प्राप्त है। बचपन से ही आर्य विचारों के संस्कारों में पले इस जिज्ञासु बालक की आरंभिक शिक्षा औराद व गुंजोटी में हुई। तत्पश्चात् गुरूकुल वेदश्री (रामलिंग एडसी), दयानन्द दीनानगर (पंजाब) में आपने संस्कृत, व्याकरण, वेदविद्या की शिक्षा पाई। बाद में म. दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) से एम.ए. (संस्कृत) तथा पीएच.डी. उपाधियां ग्रहण की। गुरूकुलीय शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् श्रद्धेय डॉ. तानाजी आचार्य के स्नेहाशीर्वाद से आप

सन् १९९८ में वेदप्रचार हेतु लन्दन पहुंचें । लगभग १५ वर्षो तक आपने आर्य समाज लन्दन में **धर्माचार्य** के रूप में कार्य किया । सम्प्रति वे स्वतन्त्ररूप से लन्दन शहर में वेदधर्म का प्रसार कर रहे हैं । उनकी सहधर्मिणी सौ.डॉ. मीनाक्षीदेवी एक कुशल ग्रहिणी होने साथ ही एक प्रसिद्ध होमियोपेथिक चिकित्सिका भी हैं । लन्दन के शासकीय रूग्णालय में वे रूग्णसेवा में तत्पर हैं । अपनी कु. आस्था व अनघा इन दो कन्याओं सहित पाटिल परिवार भले ही पाश्चात्य सभ्यता के वातावरण में रहता हो, फिर भी **'पद्मपत्रमिवाम्भसा'** की भांति भारतीय संस्कृति व वैदिक सभ्यता के सत्पथ का अनुगामी बनकर वहां जीवनयापन कर रहा है ।

आर्य परिवार –

डॉ. रामचन्द्रजी के पिताजी पूर्वाश्रम के श्री अण्णाराव पाटिल गांव के एक प्रतिष्ठित व्यापारी व श्रमिक कृषक थे । पू. हरिश्चंद्रजी गुरूजी के कारण उनका पूरा परिवार वैदिक धर्मी बना । आज भी इस परिवार के सभी लोग आर्य समाज के प्रचार कार्य मे सहयोग देते हैं । घर के सभी धार्मिक कृत्य व संस्कार वैदिक रीतिसे ही सम्पन्न होते हैं । मृत्यूपरान्त देह को भूमि में दफनाने जैसी पौराणिक क्रिया को उन्होंने तिलाजंलि देकर इन्होंने वैदिक अन्तेष्टि संस्कार की परम्परा का आरम्भ किया । वृद्धा माताजी महादेवीजी का अन्तिम संस्कार वैदिक पद्धति से ही करवाया । इन कार्यों में श्री गुणवंतरावजी तथा अन्य भाई भी विज्ञानमुनिजी के साथ रहें और आज भी वे आर्य विचारों को अपनाते हैं ।

समाज में सधन माने जानेवाले इस प्रतिष्ठित पाटिल परिवार ने अनेकों विपदायें झेली । किन्तु प्रखर ईश्वर विश्वासी व दृढ वेदानुरागी इस परिवार ने इन संकटों का सामना बडे धैर्य के साथ किया । डॉ. रामचन्दजी के बडे भाई श्री राजेन्द्रजी (श्रीकृष्ण) कृषिं व्यवसाय व व्यापार कार्य के साथ ही स्थानीय आर्य समाज के मन्त्री के रूप में वेदप्रचार की गतिविधियों को आगे बढा रहे हैं। सारे परिवार को जोडकर वें सभी पर आत्मदृष्टि रखते हैं । छोटे भाई श्री शरदजी भी उमरगा में दुकान का कारोबार देखते है ।

डॉ. रामचंद्रजी के पिताजी वैद्य विज्ञानमुनिजी (अण्णाराव पाटिल) सद्धर्मपरायण व सेवा, विनयादि गुणों से परिपूर्ण हैं तथा व आयुर्वेद व प्राकृतिक चिकित्सा के अध्येता व प्रचारक भी हैं । समय–समय पर इन्हें अपने अभिन्न सखा श्री डॉ. ब्रह्ममुनिजी (सु.ब.काले) का बंधुवत् स्नेहाशीष व मार्गदर्शन प्राप्त हैं । सन १९९५ में अजमेर के ऋषिमेला अवसर पर वीतराग संन्यासी पू. (स्व.) स्वामी सर्वानन्दजी से वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा लेकर

श्री अण्णारावजी **'विज्ञानमुनि'** बनें । ब्रह्ममुनिजी की प्रेरणा से वे विगत लगभग २५ वर्षों से आर्य समाज परली वैजनाथ द्वारा संचालित गुरूकुलाश्रम में सेवा दे रहें हैं तथा संजीवनी चिकित्सा केन्द्र के प्रमुख वैद्य बनकर तन्मना मरीजों की सेवा में तत्पर हैं ।

अनोखी दानशीलता-

लन्दन जाने के बाद डॉ. रामचन्द्रजी केवल अपने निजी स्वार्थ में लिप्त नहीं रहें, बल्कि उन्होंने पारिवारिक व सामाजिक उत्तरदायित्व को भी भलीभांति निभाया हैं । माता-पिता व भाई-बहन के परिवार की वें सदैव आर्थिक सहाय्यता व सेवा करते आ रहें हैं । आर्य समाज व विभिन्न गुरूकुल संस्थाओं को भी आपने उदार भाव से दान दिया । उन्होंने अपने पूज्य पिताजी श्री विज्ञानमुनिजी के गौरव में आर्य समाज औराद के प्रचार व प्रसार कार्य के लिए रू. १,११,००० की स्थिरनिधि बनाई । आर्य समाज गुंजोटी के बांधकाम हेतु आपने रू. ५१,००० का दान दिया । इसी गांव के घण्टा मठ के लिये भी इन्होंने रू. ३१,००० का सहयोग दिया । हैदराबाद के कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, अलियाबाद के लिए आपने रू. १,११,०००० प्रदान किये हैं। आर्य समाज उमरगा के लिये रू. २१,००० की दानराशि प्रदान की। साथ ही अपनी गुरूकुलीय शिक्षाभूमि गुरूकुल एडसी (महा.) व दयानन्द मठ दीनानगर को भी दाननिधियां दी हैं । साथ ही हिमाचल के गुरूकुल चम्बा व दयानन्द मठ, घण्डरा तथा गुरूकुल करतारपुर (पंजाब) व श्रद्धानन्द गुरूकुल परली (महा.) इन संस्थानों को भी आपने दानराशियां प्रदान कर अपनी अनोखी उदारता का परिचय दिया हैं ।

दानवृत्ति के साथ ही डॉ.रामचन्द्रजी में सेवाभाव कुटकुटकर भरा है । जब भी भारत से कोई विद्वान् या आर्य पर्यटक लन्दन पहुंचते हैं, तो डॉ. श्री रामचंद्रजी व उनकी धर्मपत्नी डॉ.मीनाक्षीदेवी बडी श्रद्धा व नम्र भावसे सबका आदरातिथ्य करते हैं । सभी मित्रजनों व सम्बन्धियों के प्रति आत्मियतापूर्वक सद्व्यवहार करते हुए **'एक आदर्श आन्तर्राष्ट्रीय वैदिक धर्म प्रचारक'** होने का कीर्तिमान आपने स्थापित किया है ।

अपने भ्राताश्री राजेन्द्रजी पाटिल व भाभीजी सौ. महान्तेश्वरी के गौरव में महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा को वेदप्रचार के उद्देश्य से आपने रू. १,११,१११ का महादान देकर बहुतही प्रशंसनीय प्रेरणाप्रद कार्य किया है ।

इस प्रेरणादायी कार्य के उपलक्ष्य में आर्यजगत् आपका व आपके परिवार का अभिनन्दन करता हुआ आपके दीर्घायु की कामना करता है ।

डॉ. पाटिल दम्पती (लन्दन) द्वारा सभा को स्थिरनिधि स्थापना हेतु दिया गया पत्र ।

ओ३म् डॉ. रामचंद्र भाऊराव पाटील
डॉ. सौ. मिनाक्षी रामचंद्र पाटील
मु. ओरपिंगटन, केंट, लंडन, इंग्लैंड

To
श्रीमान मंत्री/प्रधान
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्यसमाज परळी-वै.
जि. बीड महाराष्ट्र
दि. 20-9-2014

विषय :- सशर्त स्थिरनिधी सभा में रखने हेतु विनंती।

महोदय सं. नं.

हम डॉ. रामचन्द्र और डॉ. सौ. मिनाक्षी ओरपिंगटन, इंग्लंड के महाराष्ट्र निवासी है। भारत छोड़कर [illegible] हम और यहां हम अभी लंडन में वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे है।

मेरे बड़े भाई श्री राजेंद्र उर्फ श्री कृष्ण का 50 वां जन्म दिन [illegible] उन की सुवर्णजयंती पर [illegible] उनके और उनके पत्नी सौ. महानंदा [illegible] के नाम पर सभा में एक सशर्त स्थिर निधी रखना चाहते है। अतः आपसे विनंती है सभा में निम्न शर्तों के साथ रख लेवे।

1. स्थिरनिधी का नाम :- म. आ. प्र. सभा रखेगा श्री. राजेंद्र उर्फ श्रीकृष्ण भाऊराव पाटील एवं सौ. महानंदा राजेंद्र पाटील ओरपिंगटन स्वर्णजयंती 2015 मानव जीवन निर्माण अभियान स्थिरनिधी"

2. स्थिर निधी का मूल धन :- रु. 11111/- एक हजार ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह केवल।

3. इस निधी का मूल धन कभी भी कोई भी सभा के प्रस्ताव से भी ना निकाल सकेगा, ना खर्च कर सकेगा जो कि इस का केवल व्याज खर्च होगा।

4. इस स्थिर निधी का वार्षिक व्याज सिधा सभा को SBI parli के खाते नं. 11154152843 में जमा होगा।

5. सभा इस व्याज का उपयोग मानव जीवन निर्माण में
(i) स्कूल कॉलेज में व्याख्यान
(ii) विद्यार्थीयों में वैदिक साहित्य भेट करना
(iii) वैदिक ट्रैक्ट छोटी पुस्तकों का छाप के बाटने
(IV) सौजन्य स्थिरनिधी के नाम पर होगा। इन के नाम पर स्थिर रख कर वर्षानुसार [illegible] पर करेगी।

Received.
V.S. Rathod

6. इस की अंतीम स्वामीनी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा नई-दिल्ली होगी।

अतः स्वीकार करे।

आपके-
डॉ. रामचन्द्र भाऊराव पाटील
डॉ. सौ. मिनाक्षी रामचन्द्र पाटील
मु. पो. ओरपिंगटन, इंग्लैंड

सभा द्वारा स्थिरनिधि बनाने के लिये भारतीय स्टेट बैंक, परली को दिया गया पत्र

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती
चार्य देवदत्त तुंगार, नांदेड
ब्रजजीभाई धेलाणी, पुणे
विश्वराव विसलदार, सोलापुर
ओमप्रकाश होलीकर, लातूर
भगवानराव आर्य (तुलगुंडे), परली
डॉ. नयनकुमार आचार्य, परली
वंकटेश हालिंगे, लातूर
सौ. शारदादेवी तुंगार, नांदेड
तिलती स्नातेवी तिवारी, धारुर
दत्ताकरराव देशपांडे, मुखेड
अर्जुनराव सोमवंशी, उदगीर
डॉ. प्रकाश कदम, परभणी
नारायणराव कुलकर्णी, नांदेड
माणिकराव भोसले, लातूर
केशवराव राऊत, लातूर
जोगेंद्रसिंह चौहान, सं.नगर
ॲड. विजयकुमार वाघमारे, निलंगा
सेलयकुमार कांबळे, निलंगा
वेद विज्ञानमुनिजी, परली
सुरेश चिंतावर, धर्माबाद
बळीरामजी पाटील, निलंगा
गुलाबचंदजी लदनीया, हिंगोली
हिरामनजी डोईजोडे, औ. शहाजनी
कपिलमुनिजी वानप्रस्थी, धर्माबाद

प्रधान: डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी

दि. 30. 9. 2015

प्रति,
मा. शाखाधिकारी साहेब
भारतीय स्टेट बैंक परली वै.

विषय:- सभा के स्थिरनिधी TDR रखने हेतु विनंती।

महोदय,

उपरोक्त विषय के अनुसार आपसे विनंती कि जाती है कि डॉ. रामचंद्र और सौ. मिनाक्षी, औरंग बा. हेतु रहैदन वासी ने सभा को स्थिरनिधी रखने के लिए सभा को दान दिया है। कृपा करके आप सभा की स्थिरनिधी रखने की व्यवस्था करें।

स्थिरनिधी की शर्ते निम्न है।

1) स्थिरनिधी का नाम:- म. आ. प्र. सभा स्व. श्री राजेन्द्र उर्फ श्रीकृष्ण आप्पाराव पाटील एवं सौ. महानंदा स्वर्गीय राजेन्द्र पाटील औराद स्वर्णजयंती 2015 मानव जीवन निर्माण अभियान स्थिरनिधी।

2) स्थिरनिधी का मूल्यधन:- 1,11,111/- एक लाख ग्यारह हजार एकसो ग्यारह रुपया।

3) इस स्थिरनिधी का मूल्यधन कभी भी, कोई भी, सभा के प्रस्ताव से भी ना निकाल सकेगा, ना गहाण रख सकेगा, ना कर्जा उठा सकेगा। सभा केवल पुनर्नवीकरण होगा।

4) इस स्थिर निधी का वार्षिक ब्याज सीधा सभा के खाता क्रमांक 11154152843 मे जमा होगी।

5) सभा इस ब्याज को उपयोग मानव जीवन निर्माण के काम मे करेगी।

6) इस स्थिर निधी की अंतिम स्वामिनी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली होगी।

इन शर्तो के साथ स्थिर निधी रखने की कृपा करें। धन्यवाद।

STATE BANK OF INDIA

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभाके लिए

प्रधान मंत्री कोषाध्यक्ष

डॉ. श्री रामचन्द्रजी पाटिल एवं डॉ.सौ. मीनाक्षीदेवी पाटिल (लन्दन) द्वारा वेदप्रचार व वैदिक व्याख्यानमाला हेतु महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में अपने भ्राताश्री राजेन्द्रजी (श्रीकृष्णजी) व भाभीजी सौ.महान्तेश्वरी पाटिल के गौरव में स्थापित रू. १,११,१११/– की स्थिरनिधि (फोटोस्टैट)

यह अपरक्राम्य लिखत नहीं है
This is not a Negotiable Document

भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA

No Withdrawl only RENEWAL !!

[Yearly Intt Creditor to 11154152843]

PARLI VAIJNATH DIST:BEED
MAHARASHTRA INDIA 431515
Tel: 222069

सावधि जमा सूचना
TERM DEPOSIT ADVICE
(सावधि जमा रसीद के एवज में)
(In lieu of Term Deposit Receipt)

MAHARASHTRA AYRY PRTINIDHI
ARYA SAMAJ MANDIR
NEAR VAIDYANATH BAZAR
MONDHA PARLI VAIJNATH VAIJNATH
MAHARASHTRA INDIA

नामांकन /Nomination : पंजीकृत / Registered / अपंजीकृत / Not Registered
दिनांक / Date : 01/10/2015

प्रिय महोदय / महोदया, Dear Sir/Madam,

हमें यह पुष्टि करते हुए प्रसन्नता है कि आपकी निम्नलिखित राशि हमारे पास जमा है. भविष्य में, कृपया आपके पत्राचार में खाता क्रमांक का संदर्भ अवश्य दें. हमारे साथ बैंकिंग करने के लिए धन्यवाद. We have pleasure in confirming details of the following amount held in deposit with us. Please quote the account number in all correspondence. Thank you for Banking with us.

नाम /Name: MAHARASHTRA AYRY PRTINIDHI
सिफ संख्या / CIF No. 8093640417-5
पैन संख्या / PAN NO. AABTM4425A

A/L Rajendra urf Shrikrishna Annarao Patil and Mrs. Mahanteshwari Patil Award, Savarn Jayanti Manav Jivan Nirman Abhiyan Stirnidhi

खाता संचालन की विधि: / Mode of Operation : SINGLE
योजना / Scheme: TDR-GEN-PUB IND-5Y-10Y-INR

खाता क्रमांक /A/c No.	सावधि/ Term	ब्याज दर Interest @	मूल राशि Principal Amt.	जारी करने की तारीख Value Date	परिपक्वता की तारीख Maturity Date
35262058351	10 Y	7.25 %	INR 1,11,111.00	1.10.2015	1.10.2025

परिपक्वता राशि / Maturity Value :
INR 1,11 111.00

भवदीय /Yours faithfully

STATE BANK OF INDIA Parli Vaijnath Branch (5406)

प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ता /Authorised Signatory

कृपया पृष्ठ पलटें P.T.O.

Item Code - 2530017

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा द्वारा आर्य समाज, परभणी के सहयोग से

स्व.विठ्ठलराव बिराजदार की पावन स्मृति में

राज्यस्तरीय माध्यमिक विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा २०१५

विषय – 'आधुनिक युग के क्रांतिसूर्य म.दयानंद' (मराठी/हिन्दी)

रविवार, दि. २९ नवम्बर २०१५ समय - प्रातः ११.०० बजे

स्थान –आर्य समाज, परभणी (अग्रवाल मंगल कार्यालय, वसमत रोड, परभणी)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा द्वारा आर्य समाज, परभणी के सहयोग से

सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले के गौरव

राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा २०१५

विषय – 'विश्वशान्ति के लिये महर्षि दयानन्द के विचार' (मराठी/हिन्दी)

रविवार, दि. २० दिसम्बर २०१५ समय - प्रातः ११.०० बजे

स्थान –ज्ञानगंगा गुरूकुल, पिंगली रोड, परभणी

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा द्वारा आर्य समाज, परली के सहयोग से

सौ.तारादेवी मुंदडा व श्री प्रा. जयनारायणजी मुंदडा के गौरव

*** राज्यस्तरीय विद्यालयीन निबंध स्पर्धा २०१५ ***

विषय – '१९ वी शताब्दी के सुधार शिरोमणि – स्वामी दयानंद'

निबंध स्वीकृति की अन्तिम तिथि - दि. ३१ दिसम्बर २०१५

निबंध भेजने का पता –महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज परली–वै.

निबंध लिखने के लिये शब्द मर्यादा – २००० (मराठी/हिन्दी)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा द्वारा आर्य समाज, परली के सहयोग से

डॉ.सौ.विमलादेवी एवं डॉ.श्री सुग्रीव काले के गौरव में

*** राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन निबंध स्पर्धा २०१५ ***

विषय – 'हैद्राबाद स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान'

निबंध स्वीकृति की अन्तिम तिथि - दि. ३१ दिसम्बर २०१५

निबंध भेजने का पता –महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज परली–वै.

निबंध लिखने के लिये शब्द मर्यादा – ३००० (मराठी/हिन्दी)

समाचार दर्पण

दोडिया परिवार द्वारा परली में यज्ञशाला का निर्माण

दि.५,६,७ व ८ दिसम्बर को यज्ञ, भजन व प्रवचन कार्यक्रम

परली के उदारमना उत्साही आर्य कार्यकर्त्ता श्री जयकिशोरजी दोडिया एवं उनकी सहधर्मिणी सौ.सरोजदेवी दोडिया तथा परिवार की ओर से अपने पिताजी पू.हरिप्रसादजी एवं माताजी पूज्या रुक्मिणीदेवी के गौरव में लगभग ३ लाख रुपयों की लागत से आर्य समाज परली में भव्य यज्ञशाला का नवनिर्माण हो चुका है। इसका उद्घाटन तथा मातृ-पितृ गौरव समारोह के उपलक्ष्य में आगामी दि.५, ६, ७ व ८ दिसम्बर को वेदपारायण यज्ञ, भजन, प्रवचन तथा अन्य कार्यक्रमों आयोजन हो रहा है। इस चतुर्दिवसीय समारोह में आर्य जगत के वैदिक विद्वान आचार्य पं.वीरेन्द्रजी शास्त्री (सहारनपुर-उ.प्र.) यज्ञविशेषज्ञ पं.डॉ.प्रद्युम्नजी आर्य (छत्तीसगढ) तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं.सन्दीपजी वैदिक (सहारनपुर-उ.प्र.) पधार रहे हैं। अन्तिम दिन तपस्वी वयोवृद्ध संन्यासी पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी, सभाप्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी व मन्त्री माधवरावजी देशपांडे के प्रमुखातिथ्य में तथा परली आर्य समाज के प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया की अध्यक्षता में यज्ञशाला उद्घाटन तथा दोडियाजी के माताजी व पिताजी का गौरव होगा।

अतः समारोह में पधारने का अनुरोध दोडिया परिवार ने किया हैं।

प्रो.होलीकरजी सहसम्पादक बनें !

जाने-माने वैदिक विद्वान् व प्रसिद्ध भाषाविद् प्रो.श्री ओमप्रकाशजी होलीकर - विद्यालंकार (लातूर) को वैदिक गर्जना मासिक पत्रिका के सहसम्पादक पद पर नियुक्त किया गया है। प्रान्तीय सभा की हाल ही में परभणी में सम्पन्न हुई त्रैमासिक अन्तरंग बैठक में सर्वसमति से यह निर्णय लिया गया। प्रो. श्री होलीकरजी महाविद्यालयीन अध्यापन सेवासे निवृत्त होने के पश्चात् अपना सारा समय स्वाध्याय लेखन, संशोधन व पीएच.डी. शोधार्थियों को मार्गदर्शन करने तथा वेदप्रचार आदि कार्यों में व्यतीत करते हैं। आप सभा के पुस्तकाध्यक्ष एवं पं.नरेंन्द्र वैदिक अनुसंधान केंद्र, गुरूकुल आश्रम परली के प्रमुख भी हैं। वैदिक गर्जना के सहसम्पादक बननें पर आपका हार्दिक अभिनन्दन !

शोक समाचार पं. भीमाशंकरजी साखरे नहीं रहे ।

हिन्दी व मराठी भाषा में वैदिक साहित्य का लेखन करनेवाले लगनशील वेदप्रचारक पुरोहित तथा आर्य समाज आलन्द (जि.गुलबर्गा -कर्नाटक) के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री भीमाशंकरजी साखरे का गत दि. २१ अक्टूबर २०१५ की मध्यरात्रि में २:३० बजे वृद्धापकालीन रूग्णता के कारण दु:खद निधन हो गया ।

उनकी आयु ८४ वर्ष की थी । नि:सन्तान रहें पं. साखरेजी अपने पश्चात् धर्मपत्नी श्रीमती कमलाबाई तथा दत्तक पुत्र श्री नरेन्द्र,बहु सौ. स्वरूपा एवं भाई के संयुक्त परिवार को छोडकर संसार से विदा हो गये ।

कर्नाटक व महाराष्ट्र के सीमावर्ती इलाके में मराठी, कन्नड व हिन्दी भाषा में यज्ञादि कार्यों के माध्यम से वेदप्रचार करनेवाले श्री साखरेजी के कईं लेख आर्य जगत् की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपते थे । वे मृदुभाषी, मिलनसार, परिश्रमी, शांत, सुस्वभावी व आर्यसमाज के निष्ठावान कार्यकर्त्ता के रूप में पहचाने जाते थे । दोपहर ४ बजे उनपर वैदिक पद्धतिसे अन्तिम संस्कार किये गये ।

एड्. प्रकाशजी आर्य को मातृशोक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एड्. श्री प्रकाशजी आर्य की माताजी श्रीमती जानकीदेवी भगवानदासजी आर्य का गत दि. २४ अक्टूबर २०१५ को प्रातः १० बजे महु (म.प्र.) में वृध्दावस्था से निधन हुआ ।

'जीवेत् शरद: शतम्' के अनुसार उन्होंने शताधिक याने १०२ वर्ष की आयु पाई । वे अपने पश्चात् पुत्र एड्. प्रकाशजी, कन्या सौ. प्रमिलाबेनजी, बहु, पौत्रादि परिवार को छोडकर संसार से विदा हुई । आर्योचित गुणों की प्रतिमूर्ति रहीं माताजी का जीवन यज्ञमय रहा है । धार्मिक व आध्यात्मिक विचारों से ओतप्रोत माताजी सदैव परोपकारादि कार्यों में संलग्न रहती थी । अपने पतिदेव दिवंगत श्री भगवानदासजी के राष्ट्रीय, सामाजिक कार्यो में उन्होंने उत्साह के साथ काफी योगदान दिया था । साथही परिवार के सभी सदस्यों को आर्य विचारों से सुसंस्कारित करने का कार्य उन्होंने बडी निष्ठा का साथ किया। यज्ञ किये बिना वह कोई भी कार्य नहीं करती थी ।

दिवंगत माताजी के पार्थिव पर नर्मदातट पर पूर्ण वैदिक पद्धतिसे अन्तिम संस्कार किये गये । ग्यारह दिनों तक घर पर शांति यज्ञ चलता रहा ।

दिवगंत आत्म्याओं की शांन्ति तथा सद्गति के लिये म.आ.प्र.सभाद्वारा प्रार्थना

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

सुभाषिद सन्देश — आई - वडील व गुरूंचे कर्तव्य

सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः ।
लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः ॥ (व्या. महाभाष्य)

अर्थ–जे आई वडील आणि आचार्य मुलांना व शिष्यांना शिक्षा करतात, ते जणू आपल्या मुलांना व शिष्यांना आपल्या हातांनी अमृत पाजतात. आणि जे मुलांचे किंवा शिष्यांचे लाड करतात, ते आपल्या मुलांना व शिष्यांना विष पाजून त्यांचा नाश करतात. कारण लाडाने मुले व शिष्य दुर्गुणी आणि शिक्षेने सद्गुणी बनतात.

दयानंदांची अमृतवाणी — जीवात्म्याची स्वतंत्रता

ज्याच्या आधीन शरीर, प्राण, इंद्रिये व अंतःकरण आदी गोष्टी असतात, त्याला स्वतंत्र म्हणतात. जो स्वतंत्र नसतो त्याला त्याच्या पापपुण्याचे फळ कधी मिळू शकत नाही. उदाहरणार्थ सेनापतीच्या आज्ञेने किंवा प्रेरणेने युद्धामध्ये सैनिक अनेकांची हत्या करतात. तरीही ते गुन्हेगार ठरत नाहीत. कारण ते सेनापतीच्या आधीन असतात. त्याचप्रमाणे परमेश्वराच्या प्रेरणेने व आज्ञेने जीवांनी कामे केली. तर त्यांना पाप किंवा पुण्य लागत नाही. परमेश्वर त्या कर्माचा प्रेरक असल्यामुळे जे काही फळ मिळावयाचे ते त्यालाच मिळेल. स्वर्ग–नरक किंवा सुख–दुःख हे परमेश्वरालाच मिळेल. जर एखाद्या माणसाने शस्त्रांच्या साह्याने एखाद्याला मारून टाकले, तर तो मारणारा पकडला जातो. आणि त्याला शिक्षा होते. शस्त्राला कोणी शिक्षा करीत नाही, कारण ते परतंत्र असते. याचप्रमाणे पराधीन जीवाला पापपुण्याची फळे भोगावी लागणार नाहीत. म्हणून आपल्या सामर्थ्यानुसार कर्म करण्याच्या बाबतीत जीव स्वतंत्र आहे. पण जेव्हा तो पाप करतो, तेव्हा ईश्वराच्या सुख–दुख रूपी व्यवस्थेमध्ये तो पराधीन असल्यामुळे पापाचे फळे भोगतो.म्हणून कर्म करण्याच्या बाबतीत जीव स्वतंत्र असून पापाचे दुःखस्वरूप फळ भोगण्याच्या बाबतीत परतंत्र आहे.

(महर्षी दयानंद रचित सत्यार्थप्रकाश)

वैदिक साहित्यसाधक स्व.भीमाशंकर साखरे

– ज्ञानकुमार आर्य (अंतरंग सदस्य, म.आ.प्र.सभा)

मागील आठवड्यात साखरेजी गेल्याचे कळताच मन सुन्न झाले. दुसऱ्या दिवशी गुलबर्ग्यास फोनवरुन विचारणा केली. दसऱ्याच्या आदल्या दिवशीच त्यांचे निधन झाल्याचे नातलगांनी कळविले. व्यवस्थित संचार-संपर्क न झाल्याने त्यांच्या अन्त्यदर्शनास उपस्थित राहता आले नाही, याची रुखरुख लागून राहिली.

साधारण दीड महिन्यापूर्वी त्यांनी आम्हां उभयतांना (मला व सौ.इंदूला)स्व.धर्मदीप लोखंडे यांनी श्रद्धांजली च्या रुपांने त्यांच्या स्मरणार्थ **'दैनिक पंचमहायज्ञ(मराठी)'** या ग्रंथाची दुसरी आवृत्ती काढण्याविषयी कळवळून विनंती केली होती. त्यावेळी त्यांच्या आवाजातील कातरता आणि अगतिकता मन गलबलून टाकणारी होती. 'या आवृत्तीच्या प्रकाशनाचा संपूर्ण खर्च मी देतो, ही माझी शेवटची इच्छा आपण पूर्ण करावी', असे त्यांनी काकुळतीला येऊन सांगितले होते. त्यांच्या हयातीत त्यांची ही इच्छा पूर्ण करु शकलो नाही, याबद्दलही मनाला बोचणी लागून राहिली आहे. साहित्य प्रचाराविषयीची ही तळमळ त्यांच्या झपाटलेल्या व्यक्तिमत्वाची साक्षच देते.

बालपण व शिक्षण –

आळंद, जि.गुलबर्गा या कर्नाटकातील गावी एका शेतकरी कुटुंबात १९ जुलै, १९३१ रोजी भीमाशंकरजींचा जन्म झाला. चंदप्पा विठोबा साखरे हे त्यांचे वडील व ताराबाई ह्या आई! तत्कालीन प्रतिकूल परिस्थितीमुळे त्यांना केवळ पाचवीपर्यंत शिक्षण घेता आले. मात्र लहानपणापासूनच ते अत्यंत प्रभावशाली होते. शालेय शिक्षण बेताचे झाले असले तरी आपल्या जिज्ञासू वृत्तीमुळे ते स्वाध्यायशील बनले. स्वाध्याय, श्रवण, चिंतन व मनन यांद्वारे त्यांना लेखनाविषयी व वक्तृत्वाविषयी आवड निर्माण झाली. या बळावरच पुढे चालून ते एक यशस्वी लेखक व वक्ता बनले. मराठी, हिंदी व कन्नड या तिन्ही

भाषांवर त्यांचे प्रभुत्व होते.

कौटुंबिक जीवन –

भीमाशंकरजी हे अत्यंत प्रेमळ स्वभावाचे व मनमिळाऊ वृत्तीचे होते. वडिलांच्या निधनानंतर कुटुंबाची संपूर्ण जबाबदारी त्यांच्यावर पडली. हे कुटुंबप्रमुखाचे ओझे त्यांनी शेवटपर्यंत पेलले. पुढे चालू ते एक सधन शेतकरी बनले. त्यांनी कुटुंबातील सर्वांचा प्रेमाने व मायेने सांभाळ केला. विठोबा हे त्यांचे थोरले बंधू. त्यांचा वंशविस्तार झाला. स्वत: भीमाशंकरजी व त्यांचे लहान बंधू अर्जुन यांना संतानप्राप्ती झाली नाही. भाऊ, भावजया, थोरल्या भावाची मुले–मुली, सुना–नातवंडे अशा एकूण ४० लहान–थोर सदस्यांचे ते कारभारी होते. शेवटपर्यंत त्यांच्या शब्दाला मान होता. सर्व कारभार हातात असला तरी त्यांनी कोणावरही अन्याय केला नाही. स्थावर मिळकतीतील ज्याचा–त्याचा समान व न्याय्य वाटा त्यांना दिला.

श्रीमती कमलाबाई ह्या भीमाशंकरजींच्या धर्मपत्नी ! गुलबर्गा जिल्ह्यातील शहापुर(गोगी) येथील परशुराम मिरजी यांच्या त्या कन्या. त्यांचे शिक्षण चौथीपर्यंत झालेले. कन्नडबरोबरच हिंदी–मराठीचेही त्यांना ज्ञान होते. पतीच्या प्रत्येक कार्यात त्या शेवटपर्यंत सहभागी झाल्या आहेत. या फारच शांत व प्रेमळ स्वभावाच्या आहेत. साखरेजींनी आपला वंश पुढे चालविण्यासाठी अगदी उतार वयात २००९ मध्ये आपल्या भावाच्या नातवास (सौ.शोभा व श्री शशिकांत यांच्या नरेंद्र नावाच्या मुलास) दत्तक घेतले. १५ फेब्रुवारी २०१३ ला त्याचा विवाह केला. सौ.स्वरुपा (बेल्लारी येथील सौ.अरुणाबाई व श्री सुरेश बाबू मळेकर यांची कन्या) ही त्यांची सून. गेल्या तीन वर्षापासून गुलबर्गा येथेच त्यांनी कायमचे वास्तव्य केले.

सामाजिक कार्यातील सहभाग –

आर्य समाजाने १९३८ चा हैद्राबादचा सत्याग्रह व त्यापुढील स्वातंत्र्याचा लढा अशा देशप्रेमाने भारावलेल्या काळात साखरेजींचे बालपण गेल्यामुळे त्यांच्या बालमनात राष्ट्रभक्तीचे बीज रोवले गेले. विशेषत: आर्य समाजाच्या चळवळीचा व विचारांचा त्यांच्यावर जबरदस्त प्रभाव पडला. १९४८ ला हैद्राबाद मुक्ती आंदोलनात त्यांनी सक्रिय सहभाग घेतला होता. तारुण्यावस्थेत आर्यसमाजाची सेवा करण्याची संधी त्यांना प्राप्त झाली. केवळ वयाच्या अठराव्या वर्षी ते आर्यसमाज आळंदचे प्रधान बनले. पुढे २० वर्षे हे पद सांभाळून आर्यसमाजास ऊर्जितावस्था प्राप्त करुन दिली. त्यांच्या प्रधानपदाच्या

पद सांभाळून आर्यसमाजास ऊर्जितावस्था प्राप्त करुन दिली. त्यांच्या प्रधानपदाच्या काळातच आर्यसमाजाची भव्य वास्तू उभी राहिली.

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधी सभेत १४ वर्षे ते उपमंत्री पदावर कार्यरत होते. याच काळात त्यांनी पं.गोपालदेवजी शास्त्री आणि श्री.मारुतीरावजी बुलबुले यांच्या सहकार्याने सभेस बळकटी आणली. २००८ मध्ये कर्नाटक हिंदी प्रचार सभेवर आजीवन सदस्य म्हणून त्यांची नियुक्ती झाली. आर्यसमाज आळंदचा रजतजयंती समारोह, कर्नाटक प्रांतीय आर्यसम्मेलन, हु.धर्मप्रकाश बलिदान अर्धशताब्दी समारोह तसेच वेगवेगळ्या शिबीरांमध्ये त्यांचा महत्त्वपूर्ण सहभाग राहिला आहे. याबरोबच पौरोहित्याच्या व प्रवचनांच्या माध्यमातूनही त्यांनी प्रबोधनात्मक समाजसेवा केली आहे. त्यांचा सामाजिक संपर्कही खूप विस्तृत होता.

साहित्यसाधना –

साधारणपणे १९६२ पासून साखरेजींनी आपल्या लेखनकार्यास प्रारंभ केला. श्री जिव्हेश्वर समाचार, आर्यजगत् (दिल्ली), आर्यसंदेश(लखनौ), आर्यसंसार(कोलकाता), समभाव(नागपूर), युगमंथन(नांदेड), लातूर समाचार(लातूर), वैदिक गर्जना (परळी–वै.) व निष्काम परिवर्तन पत्रिका (मुंबई) इत्यादी विविध नियतकालिकांमधून त्यांचे हिंदी व मराठी लेख प्रकाशित झाले आहेत. हिंदी, मराठी व कन्नड भाषांतील त्यांचे एकूण २४ ग्रंथ प्रकाशित झाले असून 'सुमती प्रज्ञा' हा केवळ एकच ग्रंथ अप्रकाशित आहे.

२००५ ते २०१२ या ८ वर्षाच्या कालावधीत लातूर येथील सुरभारती प्रकाशनाने त्यांचे हिंदी व मराठी भाषांतील एकूण १२ ग्रंथ प्रकाशित केले आहेत. पं.नरेंद्रजी यांच्या संक्षिप्त जीवनचरित्रासह यज्ञ व संस्कारांवरील त्यांच्या या ग्रंथांनी आर्य जगतात त्यांची एक वेगळी ओळख निर्माण केली. सुरभारतीमुळे साखरेजींचे व साखरेजींमुळे सुरभारती प्रकाशनाचे नाव आर्य साहित्य क्षेत्रात सर्वदूर पोचले. साखरेजींच्या संस्कारग्रंथांनी त्यांना खूप प्रसिद्धी मिळवून दिली. अनेक आर्यविद्वानांनी त्यांच्या ग्रंथांची मुक्तकंठाने प्रशंसा केली आहे. या सर्व ग्रंथांमुळे खरोखरच त्यांची साहित्यसाधना सफल झाली आहे.

याबरोबरच त्यांनी विविध परिषदांमधून वेगवेगळ्या विषयांवर आपले शोधनिबंध सादर केले आहेत. लेखनासह पौरोहित्य आणि वक्तृत्व साधनाही त्यांनी चालू ठेवली होती. त्यांना संगीताचीही

आवड होती. वयाच्या अगदी ८०-८२ व्या वर्षीही ते मधुर भजने म्हणत असत.

पुरस्कार व दानवृत्ती -

दि.१३ /११/ २०११ रोजी मुंबई आर्यसमाज सांताक्रुजचे रु.२१००० चा 'श्री मेघजीभाई आर्य साहित्य पुरस्कार' देऊन त्यांचा सत्कार केला. तत्पूर्वी इतरही संस्थांनी त्यांना पुरस्कृत केले आहे.

साखरेजींनी पं.युधिष्ठिरजी मीमांसक यांच्यापासून प्रेरणा घेऊन वरील पुरस्काराची रु.२१००० ची रक्कम साहित्यसेवेत खर्च करण्याचा संकल्प सोडला होता. तसेच लंडनच्या शांतिदेवी मायर यांनी परळीच्या स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुलास रु.४९ लाखांचे सात्विक दान दिले आहे. त्यापासून प्रेरित होऊन साखरेजींनी सुरभारतीतर्फे प्रकाशित झालेल्या त्यांच्या ग्रंथासाठी रु.४९ हजाराचे दान दिले आहे. त्यांच्या या दानवृत्तिमुळे प्रेरित होऊन त्यांच्या आप्तेष्टांनीही वरील ग्रंथाच्या प्रकाशनासाठी भरपूर दान दिले आहे. अशा चिकाटीने व परिश्रमाने त्यांनी आपले ग्रंथ प्रकाशित केले.अशा अलौकिक व्यक्तिमत्वास विनम्र अभिवादन !

- सीताराम नगर, लातूर

मो.९६२३८४२२४०

१४ डिसेंबरला गुंजोटी येथे सभेची त्रैमासिक बैठक

प्रांतीय सभेच्या सर्व पदाधिकाऱ्यांना व अंतरंग सदस्यांना कळविण्यात येते की सभेची त्रैमासिक अंतरंग बैठक दि. १४/१२/२०१५ रोजी रात्री ८ वा. आर्य समाज गुंजोटी ता. उमरगा जि. उस्मानाबाद येथे आयोजित केली आहे. तरी सर्व अंतरंग सदस्यांनी या बैठकीस उपस्थित राहावे, ही विनंती -सभामंत्री

१५ डिसें.ला वेदप्रकाश बलिदान व ऋणनिदेश प्रकाशन

हैद्राबाद स्वातंत्र्य लढ्यातील पहिले आर्य बलिदानी 'हुतात्मा वेदप्रकाश बलिदान दिवस' येत्या १५ डिसेंबर २०१५ (रविवार) रोजी मोठ्या उत्साहात साजरा होत आहे. महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या अंतर्गत 'आर्य समाज गुंजोटी जीर्णोद्धार समिती' च्या माध्यमाने जुन्या जर्जर झालेल्या इमारतीच्या जागी नवी सुंदर वास्तू बांधण्यात आली. याकरिता अनेक दानशूर आर्यजनांनी व धर्मप्रेमी, राष्ट्रभक्त मंडळींनी भरीव आर्थिक सहकार्य केले व एक ऐतिहासिक कार्य घडले.

त्या सर्व दानदात्यांचे ऋण व्यक्त करण्याच्या उद्देश्याने जीर्णोद्धार समितीने ऋणनिर्देशन पुस्तिका मुद्रित केली आहे. तिचा प्रकाशन कार्यक्रमही याप्रसंगी पार पाडणार आहे. तरी सर्व दानशूर मंडळी व बहुसंख्येने या कार्यक्रमास उपस्थित राहावे, असे आवाहन 'आर्य समाज गुंजोटी जिर्णोद्धार समिती व स्थानिक आर्य समाज पदाधिकाऱ्यांनी केले आहे.

* सभेतर्फे विद्यार्थ्यांच्या नवनिर्मितीसाठी महिनाभर प्रबोधनयात्रा *

४० ठिकाणी होणार वैदिक व्याख्यानमाला

दरवर्षीप्रमाणे याही वर्षी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे शालेय व महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांमध्ये वैदिक सत्यज्ञान जागृती व जीवनजनिर्मिती व्हावी, या उद्देश्याने १ ते ३१ डिसेंबर २०१५ पूर्ण महिनाभर जीप वाहनाद्वारे प्रबोधनयात्रा काढण्यात येत आहे. जवळपास ४० ठिकाणच्या शाळा-महाविद्यालयात वैदिक व्याख्यानमाला अंतर्गत विविध विद्वानांची व्याख्याने पार पडणार आहेत. याकरिता मार्गदर्शक म्हणून सर्वश्री पं.ब्रिजेशजी शास्त्री(गाजियाबाद-उ.प्र.), पं.सुधाकरजी शास्त्री (सभा उपदेशक), पं.लक्ष्मणराव आर्य (वेदप्रचार अधिष्ठाता),पं.प्रतापसिंहजी चौहान (भजनोपदेशक सभा), पं.आर्यमुनिजी (हदगांव) आदींना आमंत्रित करण्यात आले आहे. श्री दत्तराव गित्ते(जीपवाहक) हे वैदिक साहित्य वितरकाची जबाबदारी सांभाळतील.

- वैदिक व्याख्यानमाला कार्यक्रम -

अंबाजोगाई.......................१/१२/ २०१५	परळी (नंदागौळ, पुस, गिरवली).......१५/१२/ १५
आडस/कि.धारूर/अंजनडोह.....२/१२/२०१५	घाटनांदूर/किनगांव...............१६/१२ २०१५
कळंब...........................३/१२/२०१५	अहमदपुर.......................१७/१२/२०१५
येरमाळा/येडसी...................४/१२/२०१५	हाळी...........................१८/१२/ २०१५
उस्मानाबाद (धाराशिव)........५,६/१२/२०१५	उदगीर.................... १९,२० /१२/२०१५
तेरखेडा...........................७ /१२/२०१५	देवणी/वलांडी...................२१/१२ २०१५
ईट/घाटपिंपरी.................. ८/१२/२०१५	औराद शहा..................... २२/१२/२०१५
वाशी.............................९/१२/२०१५	निलंगा.....................२३,२४/१२/२०१५
बनसारोळा......................१०/१२/ २०१५	कासार सिरशी/उमरगा.....२५,२६ /१२/२०१५
परळी (टोकवाडी,नागापुर, बोधेगांव)....११ /१२/१५	गुंजोटी/औराद.............२७,२८/१२/२०१५
परळी (सिरसाळा,पिंपळगांव गाढे.).......१२/१२/१५	लातूर.......................२९,३०/१२/२०१५
परळी (वसतिगृहे, आश्रम शाळा)...१३/१२/२०१५	रेणापुर.........................३१/१२/२०१५
परळी (सोनपेठ, पोहनेर).......... १४/१२/२०१५	

तरी वरील सर्व गावातील आर्य समाजाचे पदाधिकारी व कार्यकर्ते यांनी आपल्या भागात येणाऱ्या प्रबोधनकर्त्यांच्या व्याख्यान व भजनोपदेश कार्यक्रमांची सूचना शाळा कॉलेजमध्ये द्यावी, तसेच विद्वांनांची भोजन व निवासाची व्यवस्था करावी, असे आवाहन सभेचे प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी, मंत्री श्री माधवराव देशपांडे व इतरांनी केली आहे.

वार्ता विशेष

आर्य स्वा.सै.आनंदमुनिजी यांचा परळीत सत्कार

'निजामी राजवटीच्या जोखडातून मातृभूमीला मुक्त करण्यासाठी असंख्य असह्य यातना भोगणाऱ्या क्रांतिकारी हुतात्म्यांची व देशभक्तांची आठवण ठेवत नव्या पीढीने भारतमातेच्या रक्षणासाठी तत्पर राहावे. तसेच शासनकर्त्यांनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील आर्य समाजाच्या योगदानाची दखल घ्यावी', असे आवाहन मुक्ती संग्रामातील आर्य स्वा. सै.आनंदमुनिजी (श्री मन्मथअप्पा चिल्ले) यांनी केले.

परळी येथील वैद्यनाथ महाविद्यालयात दि. १७ सप्टेंबर रोजी मराठवाडा (हैद्राबाद) मुक्ती दिन साजरा करण्यात आला. यावेळी कार्यक्रमाचे अध्यक्ष प्राचार्य डॉ. आर. के. इप्पर यांच्या हस्ते श्री मुनिजींचा त्यांनी स्वातंत्र्य लढ्यात केलेल्या अपूर्व कामगिरीबद्दल शाल, श्रीफळ प्रदान करून सत्कार करण्यात आला. कार्यक्रमास प्रमुख पाहूणे म्हणून हैद्राबाद संग्रामाचे अभ्यासक डॉ. कमलाकर राऊत (अंबाजोगाई), राज्य आर्य प्र.सभेचे वेदप्रचार अधिष्ठिता लक्ष्मणराव आर्य व आर्य समाज करडखेलचे प्रधान श्री शिवाजीराव देशपांडे हे होते. यावेळी सत्काराला उत्तर देतांना स्वा.सै.श्री आनंदमुनिजी यांनी संग्रामकालीन क्रांतिकारी प्रसंग वर्णिले. तसेच त्यांनी बीदर व गुलबर्गा येथील कारागृहात १३ महिने १७ दिवस भोगलेल्या तुरूंगांतील अनन्वित अत्याचाराचे वर्णन केले.

९० वर्षीय स्वा.सै. चिल्ले (मुनिजी) खेदाने म्हणाले - ' आज आपणांस स्वातंत्र्य जरी मिळाले तरी रामराज्य आले नाही. ६५ वर्षाच्या काँग्रेसच्या राजवटीत देश रसातळाला गेला. रामाचे नव्हे तर रावणाचे देखील राज्य दिसत नाही. भारत देशात सध्या भ्रष्टाचार, अनाचार, बलात्कार, खून, लबाडी इत्यादींचे प्रमाण मोठ्या प्रमाणावर वाढत चालले आहे. अशा परिस्थितीतून देश जात असतांना युवकांनी व समाजातील राष्ट्रहितचिंतकांनी पुढाकार घेऊन देशास वाचविण्याचा प्रयत्न करावा,' असेही कळकळीचे आवाहन त्यांनी याप्रसंगी केले. स्वा.सै. आनंदमुनिजींनी आपले संग्रामकाळातील अनुभव कथन करतांना श्रोत्यांची मने हेलाऊन गेली. डॉ. राऊत व प्राचार्य डॉ. इप्पर यांचीही याप्रसंगी भाषणे झाली.

कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी केले. कार्यक्रमास उपप्राचार्य डॉ. डी.व्ही.मेश्राम, प्रा.टी.ए.कल्याणे व इतर प्राध्यापक व कर्मचारी, विद्यार्थी उपस्थित होते.

'संस्कृत ज्ञान-विज्ञानाची अधिष्ठात्री' – पं. सत्येंद्रसिंहजी

'समग्र ज्ञान-विज्ञानाची अधिष्ठात्री म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या संस्कृत या देववाणीचा मोठ्या प्रमाणात प्रचार व प्रसार व्हावा,' अशी अपेक्षा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान पं. सत्येंद्रसिंह आर्य यांनी व्यक्त केली. परळी येथील आर्य समाजात आयोजित **सामूहिक संस्कृत दिन समारंभात** ते प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते. अध्यक्षस्थानी मंत्री श्री उग्रसेन राठौर हे होते. यावेळी विशिष्ट अतिथी म्हणून शहरातील प्रसिद्ध शल्यचिकित्सक डॉ. हरिश्चंद्र वंगे हे होते. सर्वश्री पं. संदीप वैदिक, जी.एस.सौंदळे, विजयप्रसाद अवस्थी, प्रशांतकुमार शास्त्री, लक्ष्मणराव आर्य, रामकृष्ण लाहोटी आदी उपस्थित होते.मान्यवरांनी संस्कृत भाषेच्या ज्ञानवैभवाचा गौरव केला. यानिमित्त घेण्यात आलेल्या संस्कृतभाषण व श्लोकगायन स्पर्धेतील यशस्वी विद्यार्थ्यांना पारितोषिकांचे वितरण करण्यात आले. संस्थेचे आधारस्तंभ स्व.नंदलालजी लाहोटी यांच्या स्मरणार्थ उपमंत्री जयपाल लाहोटी व लाहोटी परिवाराच्या वतीने ही पारितोषिके ठेवण्यात आली होती. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचलन प्रा.अरूण चव्हाण यांनी केले, तर आभार पं. प्रशांतकुमार शास्त्री यांनी मानले. संस्कृत स्पर्धांचे परीक्षण सर्वश्री भागवतरावजी आघाव, प्रा.लक्ष्मीकांत शास्त्री-सोन्नर (माजलगांव), दिगंबर शास्त्री -देवकते, दयानंद आर्य (परभणी), प्रा. अरूण चव्हाण, प्रा. नरेश शास्त्री-कन्हेरे, लक्ष्मणराव आर्य यांनी केले.

शोक वार्ता

श्री अहमदाबादे यांना पुत्रशोक

उदगीर येथील आर्य समाजाचे कार्यकर्ते श्री भाऊराव अहमदाबादे यांचे द्वितीय सुपुत्र श्री कर्मवीर 'कुशल' (अहमदाबादे) यांचे दि. ८ सप्टें. रोजी पुण्यात आकस्मिक दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते अवघे ३१ वर्षाचे होते.

त्यांच्या मागे आई, वडील, भाऊ, पत्नी, लहान मुलगा, मुलगी असा परिवार आहे. दिवंगत कर्मवीर यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी त्यांचे जन्मगांव मौजे भातंब्रा ता. भालकी जि. बीदर (कर्नाटक) येथे प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी यांनी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले. श्री कर्मवीरच्या अकाली निधनामुळे समस्त अहमदाबादे कुटूंबावर शोककळा पसरली आहे. श्री स्व. कर्मवीर हे उदगीर येथील प्रसिद्ध नेत्रतज्ञ कर्मठ आर्य कार्यकर्ते डॉ.बी.एन मदनसुरे यांचे भाच्चे होते.

दिवंगत आत्म्यांस भावपूर्ण श्रद्धांजली

* स्वा.सै.आनंदमुनिजी का गौरव सम्मान *

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम दिवस पर परली के वैद्यनाथ महाविद्यालय में स्वा.सै.श्री आनंदमुनिजी (मन्मथअप्पा चिल्ले) का गौरव करते हुए प्रधानाचार्य डॉ. इप्पर ।

संग्रामकालीन स्मृतियों को उजागर करते हुए स्वा.सै.आनंदमुनिजी।

आर्य समाज करडखेल के प्रधान श्री शिवाजीरावजी का सम्मान करते हुए प्रो.त्र्यंबक कल्याणे ।

– कन्या आर्य संस्कार शिविर, भालकी –

शिविर के प्रशिक्षक आचार्य हरिसिंहजी का सम्मान करते हुए सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं शिविर के प्रेरणास्थान श्री हिराचंदजी वाघमारे ।

REG.No. MAHBIL/2007/7493 *Postal No. L/Beed/18/2015-1

सेवा में,
श्री

मन्त्रीजी ,
टिल्ली ःनेधि सभा,

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इ स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र इस स्थान से प्रकाशित किया।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्रदेश आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य दम्पती

श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य
(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

सौ.करुणादेवी आर्या
(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)

के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेंट